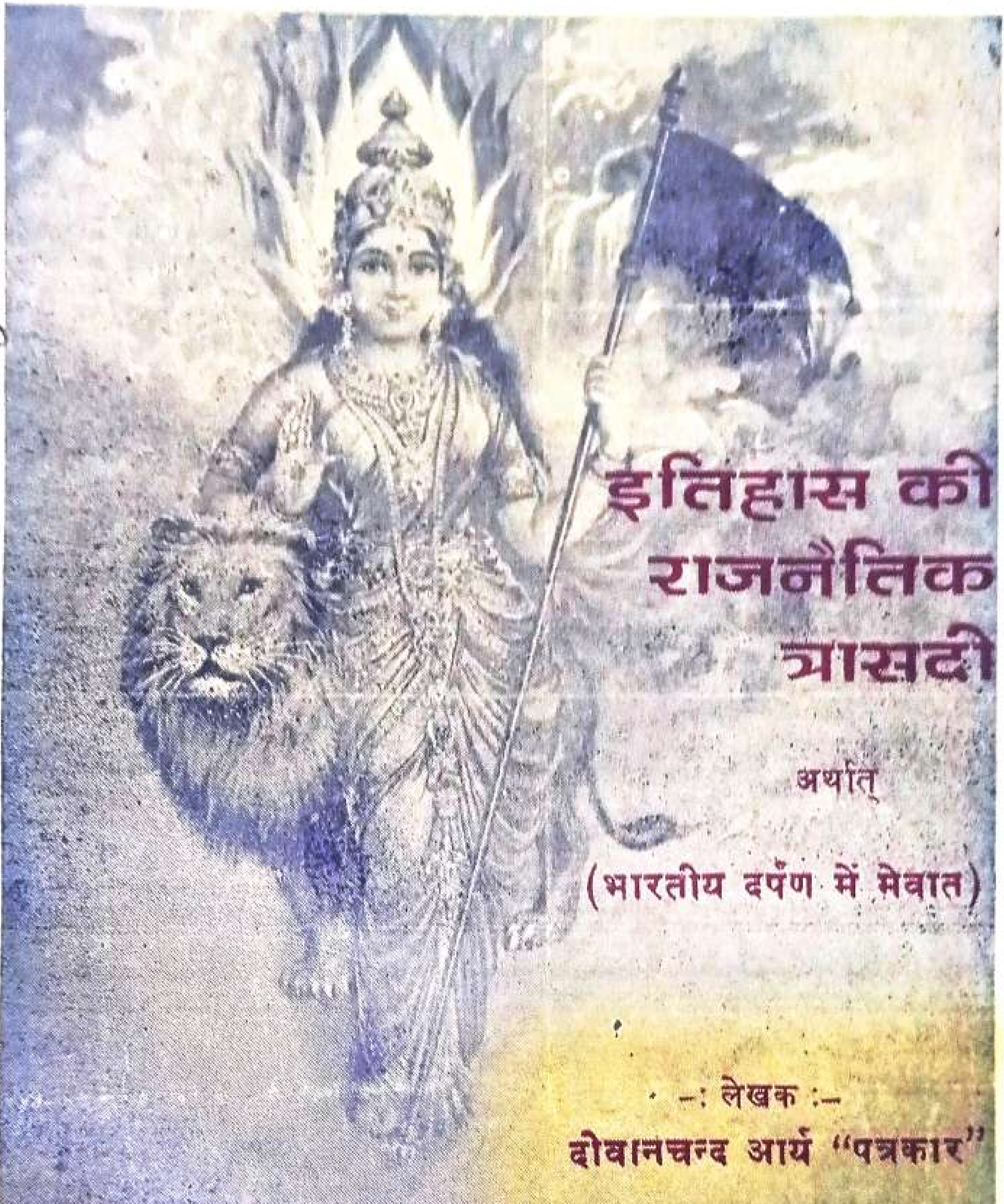

इतिहास की राजनैतिक त्रासदी

अर्थात्

(भारतीय दर्पण में मेवात)

-: लेखक :-

दीवानचन्द आर्य "पत्रकार"

शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
(दिनकर)

DIGVIJAY Printers, PUNHANA (Gurgaon)

प्रकाशक :-

भानीराम मंगला

पुन्हाना – 121104

(हरियाणा)

लेखक :-

दीवानचन्द आर्य (पत्रकार)

प्रथम संस्करण : 2000

जनवरी 1994

मूल्य : **10 रुपये**

मुद्रक :-

!! ओ३म !!

इतिहास की राजनैतिक त्रासदी

अर्थात

(भारतीय दर्पण में मेवात)

लेखक

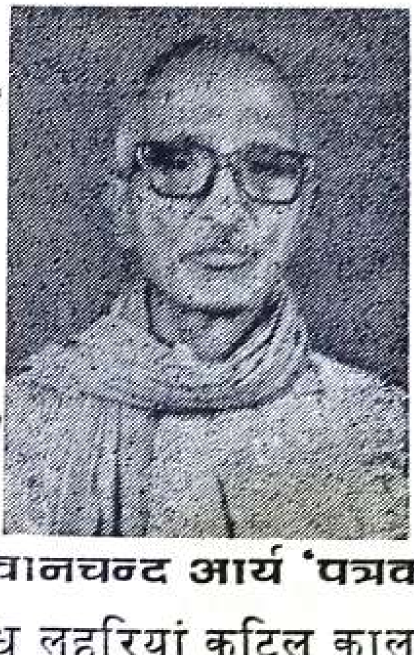

दीवानचन्द आर्य 'पत्रकार' पुनहाना

गरज रही हैं सिन्धु लहरियां कुटिल काल के जालों सी ।
चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाये व्यालों सी ।।

-: प्रकाशक :-

भानीराम मंगला, पुनहाना

ओ३म्

भूमिका

प्रत्येक राष्ट्र के 'जीवन सूत्र' रूप उसके अपने चिर कालिक औ प्रतीक मान बिन्दु होते हैं, जो राष्ट्र की 'आत्मा' होते हैं, जैसे शरीर के सभी अंगों के यथावत स्थिर होते हुए भी 'आत्मा विहीन' शून्य शरीर 'मृत' कहा जाता है। इसी प्रकार कोई भी राष्ट्र अपनी पर्वत आदि जड़ सम्पदा से पूर्ववत सम्पन्न होकर भी "संस्कृति" आत्मा से शून्य हो जाने पर 'मृत' कहलाता है। इसी दृष्टि से इकबा का कहना है कि :-

यूनानो मिश्र रोमा सब मिट गये जहां से,
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा।

विश्व के मानचित्र पर यूनान-मिस्र-रोम आज भी अतीत की भां ही विद्यमान हैं। अतः! उनके समाप्त हो जाने का अभिप्रायः मात्र उन की राष्ट्रीय आत्मा 'संस्कृति' का अवसान ही कहा जा सकता है।

राष्ट्र केवल किसी भूखण्ड के नदी, पर्वत, मरुस्थल व वृक्षों का समूह मात्र नही कहा जाता। यह कृत्रिम ढंग से निर्माण की गई एक भौगोलिक इकाई नही होती। यह एक 'जैविक अस्तित्व होता है, जिसके प्रमुख घटक होते हैं, समान मातृभूमि, समान पूर्वज व समान संस्कृति। जिनका विकास लम्बी जीवन यात्रा, निष्ठा-भावना के धरातल पर होता है। हम देखते हैं कि काश्मीर से कन्या कुमारी गुजरात से असम तक तीर्थ पर्वों पर समस्त चतुष्कोणीय भारतीय ज मानस का विराट संगम 'राष्ट्र' का जीता जागता चित्र प्रस्तुत करता

मिली जुली संस्कृति नाम की कोई चीज हुआ ही नही करती। ग

में अनेक नदियां मिलकर 'गंगारूप' ही हो जाती हैं। इसी प्रकार संस्कृति का भी एक प्रवाह होता है जिसमें अनेक धाराएं मिल जाने पर भी 'मूल प्रवाह' वही रहता है। यही चिरन्तन हिन्दु संस्कृति का प्रवाह है। इसी प्रवाह से युक्त यह भारत भूखण्ड सनातन 'हिन्दु राष्ट्र' है। यह अजस्र धारा स्वयं साक्षी है कि इसने जैन, बौद्ध, पारसी, आदि न जाने कितनी मत मतान्तरों की धारा व उपधाराओं को अपने प्रवाह में समेट लिया है। यही 'हिन्दु राष्ट्र' का ज्वलन्त सत्य है। स्टालिन जैसे नास्तिक की भी 'राष्ट्र' के सन्वन्ध में यही अवधारणा है। उनका कहना है कि :-

एक भू प्रदेश में रहने वाले लोगों का केवल आर्थिक अथवा राजनीतिक सामान्य हितों के आधार पर ही 'राष्ट्र' नही बन जाता बल्कि वह तो एक 'अभौतिक' भावनाओं की सजातीयता है।

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना है :-

"जिनके हृदयों का स्पदन एक ही आध्यात्मिक लय के अनुसार हो"।

इतिहास ! किसी घटना क्रम का चित्रण मात्र ही 'इतिहास' नहीं कहा जा सकता राष्ट्र की भाव दृष्टि से किया गया वर्णन ही राष्ट्र का इतिहास होता है। सच्चा इतिहास वही है जो राष्ट्र प्रेरणा का स्रोत हो, समाज में संस्कारों का संचार कर सके। एक ही घटना की वर्णन शैली राष्ट्रीय जीवन दर्शन को विभिन्न रूपों में मुखर करती है। उदाहरणत: अंग्रेज इतिहास कार की दृष्टि में 1857 का भारतीय विप्लव "गदर" तथा भारतीय दृष्टि संदर्भ में 'स्वातंत्र्य संघर्ष' था। भारतीय दृष्टि में वीर सावरकर, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, सुभाषचन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह व चन्द्रशेखर आजाद आदि

क्रांतिकारी युगपुरुष थे जो अंग्रेज दृष्टि में 'राजद्रोही' और गद्दार थे।

आज साम्प्रदायिक एकता के नाम पर इतिहास के 'वस्तु तथ्यों' को विकृत करने का "विक्षिप्त स्वर" सुनाई पड रहा है। क्या कबूतर अपनी छाती पर खड़ी बिल्ली से आँखे मूँदकर 'छुटकारा' पाना चाहता है ? क्या इतिहास के कागजी पृष्टों से किसी वस्तु सत्य को हटा देने मात्र से वह 'समाप्त' हो जाएगा ? इतिहास के दुष्परिणामों से शिक्षा लेकर ही भविष्य सुधारा जा सकता है आंखें बन्द करने की आत्म प्रवंचना तथा हास्यास्पद नाटकों से नहीं।

कहा जाता है कि विदेशी अंग्रेजों द्वारा लिखित अतिरंजित इतिहास साम्प्रदायिक घृणा उत्पन्न करता है। परन्तु कोई बताये कि तारीख फरिश्ता, तारीख फिरोजशाही, सैरूलमुताखिरीन, तुजके बाबरी, तुजके तैमूरी, तबकाते नासिरी वगैरा सैंकडों अरबी फारसी के इतिहास ग्रन्थ मु० शासकों के समकालीन खुदा परस्त लेखकों की रचनाएें हैं या किसी फिरका परस्त हिन्दु या अंग्रेजों की लिखी हैं ? जिनके पृष्ट के पृष्ट निर्मम हिन्दु रक्त की बाढ में डूबे हैं पंक्ति पंक्ति में आग की लपटें व दरिन्दो के दैत्य-हास मूर्त रूप लिये खडे हैं। इतिहास साक्षी है कि मौहम्मद साहिब के उत्तराधिकारी हजरत उमर फारूक, अबुबकर सद्दीक, हजरत अली, हजरत उस्मान, चारों खलीफे मुसलमानों के ही हाथों शहीद हुए थे। मौहम्मद साहिब की प्यारी पत्नी माननीया आयशा व उनके ही दामाद हजरतअली के मध्य हुए भीषण युद्ध जंगे जमल में 'लाखों' मुसलमानों के ही हाथों शहीद हुए। अभी 1980 में काबा की पवित्र भूमि हज के पावन अवसर पर ३६ हजार निर्दोष हज यात्रियों के रक्त से लाल हो गई। तो क्या मुसलमान इन घटनाओं को इतिहास पृष्टों से इसलिये हटा दें कि इन से इस्लाम की छवि धूमिल हो होती है ?

आज की विक्षप्ति सत्ता जिन अतीत के शासकों को 'राष्ट्रीय प्रतीक'

सिद्ध करने को, 'शान्ति दूत' बनाने को इतिहास को विकृत करना चाह रही है उनके सम्बन्ध में सुविख्यात इतिहास कार अलीगढ मु० वि० वि० के संस्थापक सर सैयद अहमदखां लिखते हैं :-

मुसलमानों ने जो खलीफों या बादशाहों के नाम से मशहूर हुए, दीन दारी के बहाने अपनी ख्वाहिशे नफसानी को पूरा करने और मुल्क गीरी के लिये निहायय ना इन्साफी से बरता, वहशी दरिन्दों से भी बदतर काम किये और उलेमाये इस्लाम ने उनकी ताईद के लिये ऐसे ऐसे मसले बयान किये जो रूहानी नेकी के बरखिलाफ थे। उन्होने किसी उसूले इस्लामी की पूरी तामील नही की बेइन्तहा जुल्मो सितम किये।

(तफसीर कुरान सर सैयद अहमद जिल्द १ पृ० १६२-१६७)

मु० शासकों का मजहब का नारा केवल सत्ता प्राप्ति तक सीमित रहा है। किसी भी पवित्र इस्लामी आदर्श की स्थापना का कोई प्रमाण नही मिलता। सारे शासन तंत्र का सुरा-सुन्दरी मे डूबे रहना, सुन्दर युवतियों से रनवास भरे रखना, इन ही रनवासों में सारी राजनीति का केन्द्र ध्रुव बन जाना सामान्य प्रक्रिया रही है। बूढे शाहजहां का आठ साल तक अपने धर्म निष्ठ बेटे की जेल में यातना भोगना, जब जेल में उनका खाना पानी भी नियंत्रित करा दिया गया तो दो निम्न फारसी पद लिखकर अपने सत्तारूढ बेटे को भिजवाये उनमें लिखा गया :-

आफरींबाद हिदुआं हर बाब,
मुरदा रा मे दिहन्द दायम आब।
ऐ पिसर तो अजब मुसलमानी,
जिन्दा जानम ब आब न रसानी।

अर्थात :- ऐ बेटे, हिन्दुओं को बार-बार धन्यवाद है जो (मृतक श्राद्ध रूप)

अपने मरे हुए बुजुर्गों को भी पानी पहुंचाते है। परन्तु तू विचित्र मुसलमान हे जो मुझ जिन्दे बाप को भी पानी के लिये तरसा रहा है।

आज अनेक स्थानो पर बरसात में मस्जिदों, दरगाहों की दीवारों के गिर जाने या पलस्तर उखड जाने अथवा मरम्मत के लिये की जाने वाली तोड फोड में जगह जगह हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियाँ या संस्कृत भाषा के श्लोंकों से भरे प्रस्तर फलकों का निकलना, अतीत के शासकों के क्रिया क्लापों की मुंह बोलती तस्वीर है। अकबर ने अपनी कूट नीति से मुगल सत्ता की नीवों को जो सुदृढता प्रदान की थी उसे औरंगजेब के 'अविश्वास' व कट्टरवाद ने इतना खोखला बना छोडा कि थोडे समय पश्चात ही विशाल मुगल साम्राज्य ताश के पत्तों के महल की तरह विखर गया। और :-

विकल वासना के प्रतिनिधि वे सब मुरझाये चले गये,
जले स्वयं अपनी ज्वाला में ध्वंस दृश्य देखते रहे।

आज यह तो कहा जाता है कि अतीत के मु० शासकों के व्यवहार के बदले वर्तमान के मुसलमान से ग्लानि व घृणा क्यों बरती जाती है? किन्तु इसका कोई उत्तर नहीं मिलता कि आज का मुसलमान स्वंय को भारतीय प्रतीक मान बिन्दुओं, महापुरुषों से न जोडकर अतीत के अत्याचारी शासकों को ही अपना आदर्श प्रतीक मानकर स्वंय को सगर्व उनके वर्तमान 'प्रतिनिधि' के रूप में क्यों प्रस्तुत करता है? उक्त शासकों द्वारा भारत में इस्लामी जीवन–मूल्यों की स्थापना व परिवर्धन के सम्बन्ध में मौलाना हाली लिखते हैं :–

वो दीं जिस से तौहीद फैली जहां में,
हुआ जलवा गर हक जमीनो जमां में।
रहा शिरक बाकी न वहमो गुमां में,
वो बदला गया आ के हिन्दोस्तां में।

जब अत्याचार वीरता तथा नपुंसकता 'नीति' व 'अनुशासन' कहलाने लगते हैं, जब सौहार्द बिश्वास व संवेदनाएं सूख जाती हैं, नारियां नैतिकता का धरातल त्याग देती हैं, स्वार्थ परक राजभक्ति व चाटुकारिता 'राष्ट्र भक्ति' बन जाती है, कर्म, ज्ञान व सदाचार से दूर चला जाता है, जीवन-मूल्यों की लाश पर महत्वाकांक्षा का गिध्द-नृत्य होने लगता है। मानवता का मुखोटा धारण कर दानवता अट्टहास करने लगती है, तब शंकर का तीसरा नेत्र खुलता है। इतिहास के काले पृष्ठ रक्त से धोये जाते हैं। नृसिंह की दहाड व सुदर्शन की टंकार गूंज उठती है। राजपथ पापियों के शवों से पट जाता है। आकाश अग्निशिखाओं से ढक जाता है। यही नियति का विधान है प्रस्तुत आलेख में इसी इतिहास–सत्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी ?
आओ विचारें आज मिल कर ये समस्याएं सभी ॥

(लेखक)

धर्म और राजनीति

धर्म के बिना राज सत्ता राक्षसी है (महात्मा गाँधी)

जैसे एकदम भिन्न अवस्थाऐं होने पर भी जवानी व बुढापे के बीच कोई निश्चित समय-रेखा खींचना असम्भव है, ऐसे ही कोई प्रक्रिया किस बिन्दु पर धार्मिक से 'राजनीतिक' बन जाती है यह बताना कठिन है। ऋषि मुनियों ने आबू पर्वत पर यज्ञों की 'अग्नि शिखा' से ही 'अग्निकुल' राजपूत पैदा किये थे। चाणक्य की तक्षशिला ही चन्द्रगुप्त की मातृ कोख थी। श्री कृष्ण की गीता के गर्भ से ही जन्मे थे 'अर्जुन'। गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र व अगस्त्य मुनि ही आविष्कारक थे 'नीतिपुन्ज' राम के।

किसी बडे भारी पौलिटिकल दबाव को कोई 'सशक्त' बलवान आत्मा ही निरस्त कर सकती है। आत्मबल आध्यात्म शिक्षा से पैदा होता है और आध्यात्म शिक्षा का मूल धर्म ही होता है। इतिहास साक्षी है कि संकटकाल में धर्म के धरातल पर जन्मे आन्दोलन ही उचित समय पर तत्काल 'राजनीतिक' बन गये। गुरु नानक देव जी की धर्म दीक्षा ने ही उस शक्ति को जन्म दिया जिसने हरीसिंह नलवा के रूप में 1837 -38 मे पेशावर व जमरूद पर 'भगवा' लहराया था। समर्थ गुरु रामदास की धर्म शिक्षा से ही जन्मी मराठा शक्ति ने एक शताब्दि में ही (3-7-1760) दिल्ली पर अधिकार कर लाहौर, मुल्तान व अटक तक पवित्र भगवा फहरा दिया था। यह था 'धर्मसापेक्ष' राजनीति का भारत और आज प्रस्तुत है 'वोटनीति' से जन्मा तथा कथित धर्मनिरपेक्ष भारत। आज धर्म हीन राजनीति के साम्यवाद का शव मास्को के लेनिन ग्राड में अन्तिम दर्शनार्थ रखा हुआ है।

प्रकाशकीय

मेवात के संदर्भ में गत पचास वर्षो से अनेक लेखकों द्वारा बहुत कुछ लिखा जाता रहा है ! मुस्लिम शासन काल के अनेक प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थो में भी मेव और मेवात के जातीय – चरित्र के सम्बन्ध में संक्षिप्त सांकेतिक चर्चा मिलती है ! वर्तमान मेव लेखकों का लेखनाधार प्राय: मेवों के गोत-पाल, बन्सावलियों व पारस्परिक संघर्षो के संदर्भ में लोक-काव्य में मीरासियों, भाटो द्वारा समय समय पर वर्णित अतिरंजित गाथाओं पर रहा है ! इस (मेव) वर्ग का इस्लामी करण कब–क्यों–कैसे किसके द्वारा और किस प्रकार सम्पन्न हुआ इस विषय की वास्तविकता से न केवल जान बूझकर बचने का प्रयास किया है बल्कि वस्तु–सत्य को विकृत करने की भी यथासम्भव भरसक चेष्टा की गई है ! धर्मांतरण में मुस्लिम शासको द्वारा " बल प्रयोग " की जिस प्रक्रिया को पूर्व के सारे मुस्लिम इतिहासकार नि: सकोच एक स्वर से निर्विवाद रूप में स्वीकार कर रहे है, धर्मान्तरण में प्रयुक्त उसी बल प्रयोग प्रक्रिया को मेव लेखको ने नकारने का हास्यास्पद दुष्प्रयास किया है !

धर्मान्तरण के पश्चात मेवो में उपजे सामाजिक व राष्ट्रीय चिन्तन निष्ठा व आस्था सम्बन्धी परिवर्तन के मौलिक विषय को तथा राष्ट्र-निष्ठ मेवो के प्रति मेवो की सामुहिक जातिगत श्रृद्धा व भावना के संदर्भ को जानबूझकर अनदेखा किया गया है ! प्रस्तुत पुस्तक में सुयोग्य लेखक श्री दीवानचन्द जी आर्य ने उक्त मूल तथ्य की तर्कसंगत सप्रमाण वस्तु-परक विवेचना की है ये लेखक महोदय इससे पहले अपनी **इतिहास की अर्न्तज्वाला ", " मथुरेश साहित्य चन्द्रिका "** आदि दर्जनों पुस्तकों में ऐसे गम्भीर राष्ट्रीय घटना चक्रों व ऐतिहासिक तथ्यो का अनावरण कर चुके है जो छद्म धर्म निरपेक्षता के प्रेत द्वारा

तुष्टीकरण के मरूस्थल में गहरे दफनाऐ जा चुके है ! इतिहास की अन्त -र्ज्वाला तो इतनी लोकप्रिय हुई है कि इसके उडिया व गुजराती भाष में अनुवाद किए जा रहे है !

आशा है । वर्तमान व भविष्य के राष्ट्र - निष्ठ इतिहास प्रेमियो के लिए प्रस्तुत पुस्तक (भारतीय दर्पण में मेवात) एक सशक्त मार्गदर्शक सिद्ध होगी ।

इसी विश्वास के साथ
आपका
भानीराम मंगला, पुन्हाना

ओ३म

भारतीय दर्पण में मेवात

दिल्ली के पास दक्षिण स्थित-हरियाणा-अलवर-भरतपुर का संयुक्त ुस्लिम बहुल क्ष त्र, जो वर्तमान में "मेवात" के नाम से जाना जाता है ्तीत के किसी एकही काल खण्ड में धर्मान्तरित होकर मुस्लिम बहुल बन ाया हो, सम्भव प्रतीत नही होता ! मेवात का वर्तमान चित्र उन अनेक ाताब्दियों के सामाजिक व राजनीतिक उतार-चढावों का परिणाम है जो र्म परिवर्तन का रथचक्र मुस्लिम शासन काल में शक्ति से उर्जा प्राप्त र तेज गति से निर्वाध, निरन्तर चला था ! यह धर्मान्तरण चक्र समया ुसार आज तक भी सतत गतिशील है !

मुस्लिम शासनकाल खण्ड में इस्लाम के प्रचार प्रसार में बल प्रयोग क्रिया सर्वविदित हे, निर्विवाद इतिहास-सत्य है सुविख्यात तत्कालीन ुस्लिम लेखको की प्रामाणिक विख्यात कृतियां इस की मुखर साक्षी है ! ्तत आलेख का मूल विषय धर्मान्तरण में हुए बल प्रयोग की समीक्षा ा विश्लेषण नही अपितु मेवात के अतीत व वर्तमान की सामाजिक, ्यावहारिक, मानसिकता, राजनीतिक चिन्तन, राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के रिप्रेक्ष्य में नैतिक चरित्र का वस्तु दर्शन अभीष्ट है !

कुछ इतिहासकारो का मानना है ! कि महमूद गजनवी के भानजे ्यद सालार मसऊद गाजी ने सर्वप्रथम तिजारा व रेवाडी के मध्यस्थित ुन्धगढ ' के स्थान पर तोमर वशींय राव तेजपाल को तलवार के बल मुसलमान बनाया था ! (आइना-ए-मसऊदी ख्वाजा अकबर वारिसी)

सैयद सालार मसऊद गाजी ने राव तेजपाल तौमर पर न्धगढ पर आक्रमण किया......परास्त होकर तेजपाल भाग ाया। गुप्तचरों की सूचना पर हजरत हमीदुद्दीन व दोस्त मो. सेनिक टुकड़ी के साथ तेजपाल को तिजारे में घेर कर बन्दी

बना लिया और चाहा कि तेजपाल को घोर यातनाऐ दी जाए, किन्तु उस ना मुराद ने उसी समय इस्लाम स्वीकार कर लिया जिस कदर ये मेवाती हैं सब उसी काल के मुस्लमान हुए हैं। ये सब राव तेजपाल जो (मुस्लमान होकर) जलाल खां बना था उसी की औलाद हैं तारीख ('मेव क्षत्री' प्र. ३२१ मौलाना अब्दुल शकूर)

इसके बाद सभी तौमर वशींय मुस्लमान हो गए(मेवछत्री पृ.३६८

मेवात क्षेत्र में धर्मान्तरण के संदर्भ में सुप्रसिद्ध फारसी तारीख " सैरुल मुताखरीन " पृ. ३१ पर लिखा है :- " पिदरे हेमूरां की हश्ताद साला बूद .. औरा जितरके दीन खूद व इख्तयार दीन, इस्लाम इकार नमूद. नासिरूलमुल्क जवाबश बजबान शमशीर दादह् आंपीररा अजहम गुजर आयन्द :-अर्थात हेमू के ८० वर्षीय वृद्धपिता द्वारा इस्लाम स्वीकार करने से इंकार करने पर नासिरूलमुल्क ने तलवार से उसकी जबान काट दी :- ता० मेव क्षत्री पृ. ३५५ पर मुस्लिम विजेताओं के लक्ष्य के सम्बन्ध में सपष्ट उल्लेख है !

क्योंकि मु० शासकों का उद्देश्य मात्र राज्य प्राप्त करना ही नहीं अपितू मूल उद्देश्य इस्लाम का प्रचार-प्रसार था " !

मौलाना अकबर शाह तारीख इस्लाम पृ० २५८ पर लिखते हैं :-

" सिन्ध विजय के बाद भारत के द्वार मुस्लमान विजेताओ के लिए खुल चुके थे। वे भिन्न-२ थल व जल मार्गो से मु0 प्रचार -को के दल साथ लेकर पंजाब, काश्मीर, गुजरात, राजस्थान सिंध, पर निरन्तर आक्रमण करते रहे उन्होने क्षेत्र विजय के साथ इस्लाम को भी फलाया।

एक फारसी कवि मु० अक्रान्ताओ के उद्देश्य को निम्न शब्दो में व्यक्त करता है !

हमा कोशिशे बहरे इस्लाम बूद, दिगर चीजहां दनाए दामबूद

अर्थात :- उनके सारे प्रयास केवल इस्लाम के लिए ही थे अन्य, क्रियाऐ तो मात्र औपचारिकताऐ ही थी ! एक छलावा मात्र थी !

सामाजिक दृष्टि से मेवो की सामान्य जीवन पद्धति में पूर्व के हिन्दु (वंशानुगत) संस्कारो की गहन व्यापकता का चित्रण करते हुए श्री जमल खां अपनी कृति "मेव और मेवात" 1960 के पृ. १४ पर लिखते हैं :-

याह शादि, रहन सहन और दूसरी कई चीजो में लगभग ही तरीके प्रचलित है जो दूसरी हिन्दु जातियों में हैं, ...निकट अतीत में ही मेव विधिवत मुस्लिम त्यौहार के साथ हिन्दु त्यौहार होली, दीवाली, दशहरा इत्यादि मनाते थे । होली, गाने का शौक बहुत ज्यादा था ।

रीख 'मेव क्षत्री' पृ. १२४ पर लिखा है !

वात का मुआशिरा (जीवन प्रणाली) मुकम्मिल तौर पर क्षत्रियाना है, इन मेवो में वे तमाम गुण व स्वभाव मौजूद है । जो किसी क्षत्री राजपूत कोम में होने चाहिए ।

जैसे देश के विभिन्न भागों में आबाद मुख्य हिन्दु वर्ग जाट, गूजर, अहीर, राजपूत, आदि के साथ-साथ पूर्ण हिन्दु परिवेश में ही अनेक उपजातियों जैसे : लुहार, बढई, तेली, धोबी नाई, जोगी आदि सर्वत्र देखी जाती है, इसी प्रकार मेवात में अपनी उपरोक्त मूल उपजातीय पहचान के साथ मुस्लिम मुख्य वर्ग मेबो के साथ नाई, धोबी, लुहार, जोगी, इत्यादि नामों से ही इस्लामी परिवेश में पाई जाती है ! यद्यपि इनका मूल परिवेश आज हिन्दुत्व न रहकर इस्लाम बन चुका है ! किन्तु उपजातीय पहचान पूर्व की ही (हिन्दु काल की) ज्यों की त्यों अक्षक्षुण्ण है यह इस बात का प्रमाण है कि अपनी चिरन्तन धारा हिन्दुत्व से बलपूर्वक काट दिए जाने पर भी यह वर्ग अपनी पूर्व 'पहचान' बनाए रखने में

सफल रहा है वह इसे सगर्व गरिमा चिन्ह के रूप में स्वीकार करते है।

"मेवो का जातीयचरित्र मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि में"

व जमाअते मेवान कि दर हवालिये शहर बूदन्द... बाद नमाजे दीगर अज खौफे ऐशां में बस्तन्द।

अर्थात :– मेव कोम जो दिल्ली के निकट आबाद है ! ये लोग रा[illegible] को शहर में आते घरों में सेंध लगाकर जो भी सामान हाथ लगता स[illegible] कुछ उडाकर ले जाते, कहर व गारतगरी बरपा करते ! चारों ओर[illegible] दरवाजे इनके आंतक व भय से असर की नमाज के बाद सांय ४ बजे ह[illegible] बन्द हो जाते ! **(तबकाते अकबरी फारसी मुल्ला निजामुद्दीन**

" अज गलबये मेवान मजाल न बूदे कि कसे बा[illegible] अज नमाजे दीगर अजां सिम्त बिरु आयद "

अर्थात मेवो के कारण किसी को भी साहस नही होता था कि वह दूस[illegible] नमाज के बाद (सांय ४ बजे) घर से बाहर निकले (तारीख फिरोजशा[illegible] 'जियाउद्दीन बरनी' पृ. ५५–४८)

३. यह इलाका मेवात के नाम से मशहूर था ! जो कभी परास्त न[illegible] हुआ विद्रोह इनका स्वाभाविक गुण था (तारीख मेव क्षत्री मौलान[illegible] -अ० शकूर पृ. ३३३) इसी तारीख "मेव क्षत्री" में पृ० ५८२ से ५[illegible] तक मेवों के सम्बन्ध में अनेक विख्यात बुद्धिजीवी व इतिहासका[illegible] की सम्मतियां दर्ज की गई है ! जिनमें से कुछ इस प्रकार है !

४. " यह कौम हमेशा से खूंखार, बहशी सिफ्त, चोरी पेशा मशहूर है[illegible]
('वकाये राजपूताना' ज्वाला सहाय ! १८७८ पृ. २३२–६

५. एक कौम मुल्क में मेवाती है ! डाकाजनी, राहजनी, चोरी, जिनक[illegible] स्वाभाविक गुण है मुकाबले से लडने की बजाए ये धोखे से मार दे[illegible] हैं...... गदर के समय में डेढ़ हजार फौज के मुकाबले बीस हजा[illegible] मेव भाग खडे हुए ! (तारीख मालवा-मौलवी करीम अली पृ. ३१[illegible]

. "मेवात इलाके में एक कौम मेव आबाद है...... बहुधा चोरी, कृषि, गारतगरी, से गुजारा करते है" (तारीख राजगाने हिन्द - मौलवी नजमुलगनी पृ. ३६०)

', "एक कदीम और (पुराना) और सरकस (उद्दण्ड) कबीला है ! जो दिल्ली के दक्षिण में आबाद है" (हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम डा. तारा चद पृ. ८१) जैसा कि तारीखी रिवायत से पता चलता हैं कि इन के डर से दिल्ली के दरवाजे शाम ४ बजे बन्द हो जाते थे वे अपने साथ घोडे व सवार रखते थे, अगर मौका पडता तो वे लूटमार भी करते थे ! (तारीख मेव क्षत्री ५७८) इत्यादि !

वर्तमान राजनीति की साम्प्रदायिक पृष्टभूमि :–

चौथे दशक के प्रारम्भ में जब पंजाब के एक किनारे पर काश्मीर ी हिन्दु सत्ता (महाराज हरिसिंह) की ईटं से ईटं बजाने को शेख ब्दुल्ला ने झण्डा बुलन्द किया हुआ था ! तो पंजाब के दूसरे सिरे पर लवर की जयसिह सरकार को समाप्त करने को 'किसान आन्दोलन' ा मुखौटा लगाकर मेव लीडर चो० यासीन खां इलाके में विद्रोह की वगारियां फैला रहे थे ! फलस्वरूप मेवों ने सरकारी टैक्स देने बन्द कर दए, टैक्स वसूली के लिए गांवो में जाने वाले सरकारी कर्मचारियों के तल की कई घटनाऐ भी घटित हुई ! शासकीय स्तर पर साम्प्रदायिक भेद भाव" के संदर्भ में सैयद मुत्तलवी फरीदाबादी अपनी रचना 'रियासत अलवर की किसान तहरीक" पृ. ६ पर लिखते हैं !

"अलवर राज्य के अत्याचार सब के लिए समान थे माल गुजारी और दूसरे टैक्सों की वसूली. में गऊ का नाश करने वालों (मेवों) और गौ की रक्षा करने वाले (हिन्दु) में कोई भेदभाव नही किया जाता था।

अलवर में चलाए गए इस विद्रोह को "मजलिसे अहरार" का सहयोग प्राप्त था ! आगे सैयद साहब 'किसान तहरीक' के पृ. ३१ प लिखते हैं :–

"**रियासत का सर्वाधिक बहुसंख्यक (किसान वर्ग) अहीर राजपूत इस आन्दोलन से अन्त तक अलग रहे"**। प्रश्न यह कि अलवर क्षेत्र के कृषक समुदाय में से अहीर, राजपूत को निकाल के के पश्चात कौन समुदाय कृषक वर्ग शेष रह जाता है ? जो ये आन्दोल चला रहा था ! क्या अब भी इस आन्दोलन को साम्प्रदायिक स्वीका करने में सन्देह रह जाता है ? तारीख मेव क्षत्री में पृष्ट ४८३ पर इ आन्दोलन के प्रमुख संचालकों के ४२ नामों की सूची पूरे पते के साथ दी गई है ! इस में ८ सैनिक (७ सूबेदार, १ मेजर) ३४ अन्य मुख्य नेताओं के नाम दिये गपे हैं किन्तु इस सारी सूचि में सभी नाम मेवों (मुस्लमान) हैं ! एक भी नाम हिन्दु का नहीं है किन्तु ढिठाई की चरम सीमा है कि इस आन्दोलन को असाम्प्रदायिक बताने की एक स्वर से रट लगाई गई है ! इसे 'किसानों' का आन्दोलन कहा गया है, !

१५ दिसम्बर १९३२ को रियासत के गांव धमोकड में आयोजित एक विशाल पंचायत के सम्बन्ध में सैयद साहिब लिखते हैं :–

धमोकड़ की पहाड़ियां उन भटिटयों की वजह से जो पंचायत के लिए खाना पकाने के लिए बनाई गई थी एक अदभुत नजारा पेश कर रही थी। तमाम कौमों व कबीलो के चौधरी व आसपास किसानों के दल वहां बैठे थे। अंधेरी रात में दूर तक फैले आग के शोले जता रहे थे कि कोई फौज पड़ाव ड़ाले हुए है लोहे के कड़ाहो में बाजरा नमक डालकर उबाला जा रहा था। हर गांव के नाई खाने का प्रबन्ध कर रहे थे। (पृष्ट १0)

इस पंचायत द्वारा घोषित सर्वसम्मत फैसले के प्रस्ताव को उदधृत कर सैयद लिखते हैं !

" राज्य की सब लागें (कर) आज से बन्द। पटवारियों, गिरदावरों, पुलिस और माल के सब अहलकारों को खबर दे दी जाय कि अगर किसी गांव में पांव भी रखा तो उसकी जान की जिम्मेवारी नही होगी " (कि. त. पृ. १८)

इस खुले विद्रोह की घोषणा के बाद शासन के सामने शक्ति प्रयोग या समर्पण के अतिरिक्त अन्य सभी विकल्प समाप्त हो जाते हैं ! सभी द्वार अवरुध्द हो जाते हैं !

मेव लीडर अलवर के इस विद्रोह को भरतपुर में भी निर्यात करने को पूरी तरह संकल्प बध्द थे वहां भी कुल मिलाकर यही नेतृत्व सक्रिय था सैयद साहिब पृ. ३७ पर लिखते हैं ! **" भरतपुर के किसानों ने भरतपुर राज को अलवर राज का साथी मानकर मालगुजारी व लगान देने से इंकार कर दिया।**

इस संदर्भ में तारीख मेव क्षत्री में लिखा है !

आजादी से पूर्व रियासतों में प्रजा परिषदों प्रजा मण्डलो की शकल में तहरीक फैलती जा रही थी। वह अलवर तहरीक के थोडे अरसे बाद की बात है। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि और बहुत सी "राष्ट्र भक्ति" पर आधारित तहरीके जैसे रियासत जम्मू काश्मीर में शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में थी इसी तरह भरतपुर में १९३४ में तहरीक शुरु की गई और इसे 'प्रजा परिषद' का नाम दिया गया।

(मेवस्तान)

अलवर संघर्ष के पश्चात राष्ट्रीय क्षितिज पर 'पाकिस्तान' के रूप विखण्डन की मेघ मालाएं घुमडनी शुरू हो चुकी थी जिसने मेव मान-

सिकता को भी उद्वेलित कर दिया था फलत: पाँचवें दशक के प्रारम्भ में मेव नेतृत्व में भी मेवस्तान की महत्वाकांक्षी परिकल्पना प्रस्फुटित हो उठी थी और पाकिस्तान के ध्वनि घोष के साथ ही क्षेत्रीय स्तर पर "आजाद मेवस्तान" की स्वर लहरी भी मेवात में गूंज उठी थी !

गुडगावां की नूंह व फिरोजपुर झिरका दो (मेव बहुल) तहसीलें, अलवर–भरतपुर का मेव बहुल प्रभाग, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा व मेरठ डिविजनों के कुछ भाग तथा दक्षिण दिल्ली के कुछ क्षेत्र पर आधारित "आजाद मेवस्तान" का कल्पना-चित्र तैयार करके इसमें राजनीतिक सौदे बाजी के रंग भरे जाने लगे थे, तत्कालीन सारा मेव नेतृत्व अपनी सभी विभिन्न पार्टी निष्ठाओं के मुखोटों को दूर फेंक कर एक स्वर से 'मेवस्तान' के झण्डे के नीचे एकत्र था ! यूनयनिस्ट यासीन खां, मु. लीग के महताब खां, शफात खां, कांग्रेस के अब्दुल हई, डा. अशरफ खां, सैयद मुत्तलबी, चौ. कंवल खां आदि सभी नेता इकट्ठे एक मंच पर सक्रिय थे ! किन्तु दुर्भाग्य से 'पाकिस्तान' की आंधी में यह बगूला किसी कौने में विलीन होकर रह गया यद्यपि समय के गति चक्र ने 'मेवस्तान' योजना को असफल बना दिया परन्तु यह उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में मेव बुद्धिजीवियों की अन्तर्निहित आकांक्षा के रूप में अपनी 'उपस्थिति' का समय समय पर सदैव आभास कराती रही है यह मानसिक अन्तर्वेदना मेवात के बुद्धिजीवी वर्ग की अन्तर्पीड़ा के रूप में समय–२ पर झलकती रही है ! मेवात के सक्रिय बुद्धिजीवी श्री अजमल खां अपनी रचना "मेव और मेवात" (१९६०) पृ० ७ पर लिखते हैं !

"मुगल अहदे हुकुमत तक मेवात एक बाकायदा सूबा था ... अंग्रेज ने इस सूबे को खतरनाक इलाका करार देकर इसकी एकता को टुकड़े टुकडे कर दिया और इसे हिन्दुस्तान के मुखतलिफ सूबों राजस्थान. पंजाब. (तब तक हरियाणा नही-

बना था) यू. पी., देहली, में बांट दिया, आज यह इलाका इसी पोजीशन में मौजूद है। हांलाकि यह एक मुस्तकिल इलाका है। इसकी एक मुस्तकिल तहजीब, जबान, रस्मों रिवाज है। जो और किसी इलाके से नही मिलते।

मेवात के ही एक अन्य जाने माने बुद्धिजीवी श्री अशरफखां M.A. अपनी रचना "मेव कौम और मेवात" में दर्जनों स्थानों पर मेवात को क्षेत्र या इलाका नहीं 'मुल्क' शब्द से सम्बोधित करते हैं, पृ. ५५ पर नये अध्याय का शीर्षक ही "मुल्क मेवात में मेव कौम की रियासतें" दिया गया है। प्रश्न यह है कि मेवात किसी संप्रभुत्ता सम्पन्न इकाई का नाम है या यह किसो प्रभुता सम्पन्न इकाई का भाग है? उर्दू शब्दकोष करीमुल्लुगात में पृ० २१० पर 'मुल्क' शब्द की व्याख्या में लिखा है

"एक देश जो एक बादशाह के मातहत हो" फारसी के सुप्रसिद्ध शब्दकोष 'मुन्तखिबुल्लुगात' पृ० ५७३ तथा गयासुल्लुगात पृ० ७६४ पर 'मुल्क' शब्द की व्याख्या में लिखा है 'बिल्जुम बादशाह शुदन' अर्थात :- एक शासकीय इकाई, "लुगात किशोरी" पृ. ७३६ पर है :- "बादशाह होना, बादशाही, वह देश जो एक बादशाह के कब्जे में हो" मुल्क व इलाके के भावान्तर को सामान्य अनपढ़ भी सहज समझ लेता है, फिर क्या यह स्वीकार कर लिया जाय कि एक M.A इतिहासकार ऐसे सहज सामान्य अर्थान्तर को समझने में वस्तुत: गलती कर गया है? मुल्क शब्द के साथ उसके पूरक घटक के रूप में अलग से "रियासते" शब्द जोड देने से मुल्क शब्द का स्पष्ट भावार्थ अनेक इकाइयों पर आधारित, सामूहिक, संगठित, सीमाबद्ध एक स्वतन्त्र राज्य ही माना जा सकता है यहां मुल्क शब्द किसी क्षेत्र विशेष का अलंकारिक सम्बोधन सर्वथा असंगत व अस्वीकार्य है।

क्या बुद्धिजीवियों द्वारा भावी सन्तति को मानसिक चिन्तन व पूर्वा वधारणा रूप 'मेवस्तान' की परिकल्पना को संस्कार रूप निर्यात करन नहीं है ? यह राष्ट्रीय अखण्डता को चुनौती व संविधान का उपहास है। इसकी पृष्ट भूमि का चित्रण (तारीख मेव क्षत्री) पृष्ट ५०४ – ५० पर निम्न प्रकार है !

" इन्ही दिनों कराची प्रस्ताव की रोशनी में नए आजा हिन्दुस्तान के नए सूबों के गठन सम्बन्धी योजनाएं तैया होनी शुरु हो गई थी। ...... १६४२ में एक अर्जदाश्त मुरत्ति (तैयार) करके चौ0 अब्दुल हई के नाम से प्रकाशित की ग जिसमें "पाल सूबा" या 'पाल प्रदेश' का मुकम्मिल खाक हुकूमत व अवाम के सामने पेश किया गया... इस प्रस्तावि 'पाल प्रदेश' मैं रियासत अलवर, भरतपुर, गुड़गावां, उ.प्रदे के पश्चिमी जिले मथुरा, आगरा, बुलन्द शहर व दिल्ली के दे हात इलाके को शामिल करना चाहते थे परन्तु फिरकापरस्त व सरकार ने इसे मेवस्तान बताकर विरोध किया . इस तह रीक के सिलसिले में फिरोजपुर झिरका व नौगावां (भरतपु में दो विशाल पंचायतें भी आयोजित की गई. । इस स्कीम व सूत्रपात करने वाले डा. अशरफ थे "

मेवात के सभी नेताओं द्वारा प्रस्तावित 'मेवस्तान' का भौगोलि कल्पना चित्र प्राय: समान सीमा रेखाओं पर ही केन्द्रित था ! जैसे ए दशक पूर्व के अलवर-भरतपुर के विशुद्ध साम्प्रदायिक आन्दोलनों व "किसान तहरीक" व "प्रजा परिषद" का छद्‌म नाम देकर जनता व भ्रमित करने का प्रयास किया गया था ऐसे ही "मेवस्तान" को "पाल -प्रदेश" के सर्वथा असंगत नाम से प्रस्तुत किया गया था ! बाद के मे

बुद्धिजीवियों ने इस छल आवरण को त्याग कर सीधे सपाट शब्दों में "मेवात को मुल्क मेवात" शब्द से सम्बोधित किया है !

1946 का चुनाव सारे देश में पाकिस्तान के मुद्दे पर लडा गया था मेवात के मुस्लिम बहुल नूंह व फिरोजपुर झिरका दोनो विधान सभा क्षेत्रों से मुस्लिम लीग ने क्रमश: मोलवी अहमद जान 'सूंध' व जैलदार महताब खां "सिगार" को अपने टिकट पर खडा किया था ! इनके मुकाबले पर धर्मनिरपेक्ष कांग्रेस ने दो नेशनलिस्ट प्रत्याशी क्रमश मियाजी उमराव 'चिल्ली' तथा जेलदार अब्दुर्रहीम बांधोली को मैदान में उतारा था ! परिणाम सुनिश्चित था गांधी जी के दोनो ही नेशनलिस्ट प्रत्याशी औंधे मुह गिरे और लम्बे बहुमत से दोनों सीट मुस्लिम लीग ले गई, इस चुनाव ने मेवात की मु. लीगी आस्था को सपष्ट कर दिया ! यह भारत विभाजन प्रस्ताव पर मेवात की सपष्ट स्वीकृति थी !

उस समय के राजनीतिक संघर्ष में चूंकि मु० लीग की पाकिस्तान की मांग में पूरा पंजाब शामिल था ! और पिछले एक वर्ष के राजनीतिक परिदृश्य से पाकिस्तान का बनना निश्चित प्राय: ही दिखाई देने लगा था, इसलिए यहां के मेवों का यह विश्वास स्वाभाविक ही था कि मेवात पाकिस्तान का ही भू भाग होगा ! भारत पाकिस्तान की मध्यरेखा होडल व कोसी के बीच ही बनेगी ! मेवों को स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं थी, कि विभाजन सीमा कई सौ मील दूर पश्चिम में अमृतसर व लाहौर के बीच वाघा–अटारी पर बनेगी ! मेवों की सारी भावी रणनीति व योजनाएें मेवात को पाकिस्तानी भूभाग मानकर तैयार की गई थी ! किन्तु नियति ने कल्पना चित्र बिलोम कर दिया सारी स्वणिम योजनाऐ और विश्वास दिवा स्वप्न बनकर रह गए ! स्वंय को क्षेत्र ने भाग्य विधाता समझने वालों के हृदय अब विदेशा-बोध पीडा से भर गये ! 'शासक' की भावनाऐ शरणार्थी-बोध में बदल कर रह गई !

1947

विगत के कई दशकों से निर्वाध सतत गतिशील स्वातंत्र्य संघर्ष
राजनीतिक मंच पर कांग्रेस की आत्महीनता, सत्ता लिप्सु नपुंसकता द्वार
पोषित, विकसित कठमुल्लाई जनूनी उन्माद ने १९४७ के आते-२ मेवा
के परम्परागत भाई-चारे. मानवीय संवेदना, शान्ति-सौहार्द के चित्र
काफी धूमिल कर दिया था सामान्य व्यवहार में स्नेह विश्वास आत्मीयता
के स्थान पर कूटनीति अविश्वास और घृणा का विष फैल चुका था
आधी सदी से हिन्दू काँग्रेस के जिस धर्मनिरपेक्ष आडम्बर पर सर्वस्व
बलि चढाता रहा उस धर्मनिरपेक्षता की "प्रामाणिकता" का वस्तु
यह था कि देश के कुल मुस्लिम मतों का मुस्लिम लीग को जहां १९३७
केवल 4.1% मिला था ! वहां यही अनुपात 1946 में 96.7% पर जा
पहूंचा ! अब कोई बताये कि जब मु. लीग देश में मुस्लिम मतों का इतना
विपुल प्रतिशत समेट लेती है, तो सन्त बाबा के "धर्मनिरपेक्ष बाड़े"
कितनी भेडे बाकी बची रह गई थी ?

कांग्रेस नेतृत्व की कपोत बृत्ति ने उसे विक्षिप्त और दिशाहीन बना
दिया था 1946–47 में सारा देश मु० लीग द्वारा प्रज्वलित राष्ट्र विख
ण्डन की साम्प्रदायिक लपटों में घिर चुका था तो क्षेत्रिय रूप में मेवात
को इस त्रासदी से सुरक्षित रखने हेतु अनेक बार मेवात के प्रमुख स्थान
पर हिन्दु – मुस्लिम सामूहिक पंचायतें आयोजित हुई, सामूहिक शान्ति
समितियां गठित की जाती रही ! पंचायतों में आए दिन कुरान, गंगाजल
व गीता, की कसमें खा खाकर यह संयुक्त घोषणाएें होती रही कि देश
के अन्य भागों में चाहे कहीं भी कुछ भी होता रहे हम मेवात क्षेत्र की
शान्ति व्यवस्था को किसी भी मूल्य पर नहीं बिगडने देगें ! सीमावर्ती
हिन्दु देहात उक्त घोषणाओं से पूरी तरह आश्वस्त व निश्चित थे ! उन

मवों द्वारा दिलाए गये विश्वास पर पूरा यकीन था !

किन्तु

मई के अन्तिम सप्ताह में मेवात के उत्तर पूर्व की सरहद पर एक दम मेवों की ओर से सीमा स्थित हिन्दु गावों पर हमले चालू हो गए ! २५–२६ मई को हथीन क्षेत्र के हिन्दु गांवों पर हमले चालू हो गये, २८ मई को प्रातः ५ बजे प्रभात बेला में मेवात की पूर्वी सीमा पर स्थित रावत पाल के तीन गांवों अंधोप, नागल जाट, पहाडी, पर एकदम हमले हुए ! प्रातः ५ बजे जबकि पंचायतो के फैसलों से पूरी तरह आश्वस्त हिन्दु ग्रामीण खेत खलिहानो में जाने की तैयारी में थे छोटे बच्चे नींद में सोये थे ग्राम अंधोप के ऊपर सिगार की और से ५ बजे, उटावड-कोट की तरफ से पहाडी पर ६ बजे आली मेव व बीसरू की ओर से नांगल जाट पर विशाल उन्मादी भीड शस्त्र सज्जित हो 'अल्लाहु अकबर' क नारे लगाती हुई चढ बैठी परिणामतः ६ बजे अंधोप, ७ बजे पहाडी, व दोप० बाद ४ बजे नांगल जाट, राख का ढेर बना दिए गए कई हफ्ते बाद तक इन गांवों से लूट के माल ढोये जाते रहे क्योंकि स्थानीय हिन्दु तो कवल अपने प्राण सुरक्षित बचा ले जाने को ही सौभाग्य स्वीकार करने को विवश थे, अनेक लोग तो अपने प्राण भी न बचा पा सके ! मेरे लिए यह घटनाक्रम 'पढा या सुना नहीं' प्रत्यक्ष अग्रिम मोर्चों का आंखो देखा दृश्य है !

अंग्रेजों की रणनीति आरम्भ से ही भारत के प्राणतत्व "हिन्दुत्व" को सदैव कमजोर बनाने की रही ! इसलिए सदा उनका वरदहस्त देश की विघटनकारी शक्तियों के ऊपर रहा है ! राजनीतिक संघर्ष काल में मुस्लमान कांग्रेस से जो भी सुविधाएें मांगते थे, अंग्रेज सरकार उससे भी

कुछ अधिक सुविधाऐं मु० लीग के माध्यम से मुस्लमानों को प्रदान कर मु० लीग के राष्ट्रीय वर्चस्व को बढ़ाता रही ! पाकिस्तान की मांग के साथ ही पृथक खालिस्तान के लिए सिखों को भी प्रोत्साहित किया जाता रहा ! मु० लीग व मास्टर तारासिंह की अन्दर ही अन्दर खालिस्तानी खिचडी पकती रही किन्तु अन्धेजनून में पाकिस्तानी मुस्लमानों की अन्दाज की गलती के कारण पाकिस्तान में हुए कतले आम हिन्दु व सिखो में कोई भेद-भाव पाकिस्तानी मुस्लमानों द्वारा न बरते जाने के कारण जिन्ना-तारासिंह विश्वास में दरार पैदा हो गई ! और जहां मेवों का 'मेवस्तान' स्वप्न बनकर रह गया वहीं खालिस्तानी बेल भी समय से पूर्व ही मुरझा कर रह गई, कहते हैं कि मास्टर तारासिंह की उछल कूद से तंग आकर सरदार पटेल ने एक दिन उन्हें अपनी कोठी पर बुलाकर उनके सामने हिन्दुस्तान का मानचित्र रख कर कहा, कि मेरे माथे पर इतिहास जहा राष्ट्र विघटन के पाकिस्तान निर्माण का एक कंलक अंकित करेगा, वहां मैं यह दूसरा कंलक भी लिखवा लुँगा, आप भी अपना खालिस्तान बना लो ! किन्तु यह ध्यान रख लेना कि पाकिस्तान निर्माण में हुई तकनीकी भूल को अब नहीं दोहराया जायेगा अर्थात प्रस्तावित सिखस्थान से सभी हिन्दुओं को भारत में तथा भारत में रहने वाले सभी सिखों का खालि-स्तान में विधिवत स्थान्तरण पहली शर्त होगी साथ ही आपके खालिस्तान की सीमा भी पाकिस्तान से जुडेगी ! उसके साथ अपने सभी सम्बन्धों को तुम्हें अपने आधार पर स्थिर करना होगा ! हम इस दिशा में कोई सहयोग नही करेगें, बताते हैं कि इस घटना के बाद जब तक सरदारपटेल जीवित रहे मा० जी उधर मुँह करके भी नही सोये !

अंग्रेजों की विघठनकारी शक्तियों के प्रति सहानुभूति का उदाहरण मवात में भी चिरस्मरणीय रहेगा ! गुडगावां के तावडू क्षेत्रस्थित खूंखवार

मुस्लमान बलोचों का गांव 'नौंरगंपुर' जो इलाके में अजेय समझा जाता था। हिन्दुओं से संघर्ष में परास्त हो गया इस पराजय का इतना आघात मुस्लमानों को भी नहीं लगा जितना गुडगावा के तत्कालीन उपायुक्त श्री बरण्डन को लगा वे इस घटना से बुरी तरह बौखला गये और गुडगावां के निकटस्थ ग्राम टीकली (हिन्दु गांव) को रातों रात राख का ढेर बनवा दिया इससे भी आपके हृदय को शान्ति नही मिली तो गुडगावां के दर्जनों सर्वथा निर्दोष वकीलों को सीखचों के पीछे धकेल दिया और उनसे पूछा गया कि बताओ नौंरगपुर किसने तोडा ? गुडगावां के वकीलों के पास क्या नौंरगपुर तोडने वालों की सूची थी ? इस संदर्भ में गुडगावां के एक वरिष्ठ अधिवक्ता (शायद पं० मोहनलाल) ने उपायुक्त महोदय से मिलकर जब वकीलों के बन्दी बनाए जाने का कारण जानना चाहा तो बरण्डन साहिब ने सपष्ठ कहा कि मैं जानना चाहता हूं कि नौरगंपुर किसने तोडा ? बाबूजी बोले सर ! वे वकील लोग है मेरे कहने का यकीन नही करेगें कृपया आप ये साधारण सी बातलिखकर दें। उपायुक्त महोदय पर अहंकार का जनून सबार था यह प्रश्न लिखकर बाबूजी को दे दिया बाबू जी तत्काल यह प्रश्न-पत्रक लेकर सरदार पटेल की कोठी पर जा धमके। यह सारा मामला उनके सामने रखा गया परिणामत: ४८ घण्टे में ही 'बरण्डन साहिब' सडक पर पहुंचा दिए गये इस दौरान इलाके के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता वयोवृद्ध पं. जोवनलाल जी पलवल में डेरा लगाए हुए थे मैं स्वयं उनसे दो बार मिला था। उनकी मेवात के हिन्दुओं के साथ कोई सहानुभूति नहीं थी ऐसे आपातकाल में वयोवृद्ध नेता की यह मानसिकता बडी लज्जा स्पद थी और अप्रत्याशित भी।

विभाजित भारत की सर्वथा अप्रत्याशित भौगोलिक सीमा रेखांकन से यह स्पष्ट हो जाने पर कि मेवात का क्षेत्र भारत का ही भू भाग रह गया है मेवों के उद्वेलित मानस में अपने निकट अतीत के क्रिया कलापों

से उत्पन्न अपराध बोध पीडा नाना प्रकार की आशंकाओं को जन्म दे रही थी। विगत का उन्मादी चिन्तन प्रेत रूप धारण कर प्रतिपल आंखों के आगे नाचता दिखाई पडने लगा था। भारत में ही टिके रहने अथवा पाकिस्तान पलायन कर जाने की दुविधा का मानसिक द्वन्द्व कुँठित हृदय में उमड रहा था। ऐसी विषम स्थिति में अतिवादी वर्ग तो पहले ही झटके में यहां से पलायन कर गया। देखा देखी यहां बचे खुचे वर्ग के भी पांव उखड रहे थे मेवात के लगभग सभी जाने माने नेता चौ० कंवल खां, याकूब खां कैसरी, चौ० महताब खान, मौ० अहमद जान, चौ० सरदार मौहम्मद, कंवर डा० मौहम्मद अशरफ, सैयद मुत्तलत्री फरीदाबादी, चौ० अब्दुर्रहीम जैलदार बांधौली, इत्यादि अपने लाखों परिजन, सहयोगी व धर्म बन्धुओं को साथ लेकर पाकिस्तान जा चुके थे।

चौ० यासीन खां को मेवात में अपनी एकछत्र लीडरी स्थापित करने का सुनहरी मौका हाथ आ गया। अत: आपने कांग्रेस का मुखौटा धारण कर स्वयं पाकिस्तान न जाने और अपने भावी वोट बैंक के रूप में अधिक से अधिक मेवों को यहीं रोकने का पक्का निश्चय कर लिया था। मेव समाज मैं चौधरी साहब के प्रति आत्मीय स्नेह और विश्वनीयता थी तथा अन्य मेव छत्रपों के यहां से पलायन कर जाने के बाद सामान्यत: मेव समाज का 'दृष्टिकेन्द्र' एक मात्र चौ० यासीन खां में ही सिमटकर केन्द्रित हो गया था अत: अपनी इस 'छत्रप' छवि को और सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से आपने मेवों का पलायन रोकने को 19-12-47 को घासेडा में महात्मा गांधी को ला खडा किया। गांधी जी ने मेवों को भारत में उनकी पूरी सुविधा व सुरक्षा का पक्का विश्वास दिलाया आपने यहां तक कहा कि Meo is a back bone of India अर्थात :– मेव भारत की रीढ की हड्डी है। गांधी जी के इस मेवात दौरे का प्रभाव यह हुआ कि जो लोग पाकिस्तान जाने को पूरी तरह तैयार सुबह–शाम की प्रतीक्षा कर रहे थे

उन्होने अपना इरादा बदल दिया, जो पडाव दर पडाव पाकिस्तान जाने वाली सडकों पर अपने काफले लिए जा रहे थे काफी संख्या में रास्ते से ही वापिस अपने घरों को लौट आये। कितने ही लोग जो पाकिस्तान में जाकर बस चुके थे उनमें से भी काफी लोग वापिस आकर अपन घरों में फिर से बस गये। इतना ही नहीं भारत समकार ने विधिवत यह घोषणा भी कर दी कि भारत छोडकर पाकिस्तान गया जो भी मुस्लमान ८ जुलाई १९४८ तक वापिस भारत में आकर जनगणना में अपना नाम दर्ज करा लेगा उसकी सारी छोडी हुई सम्पत्ति उसे लौटा दी जाएगी, वे उसके पूर्ववत 'स्वामी' व भारत के सामान्य नागरिक बने रह सकेंगे इस सम्बन्ध में दृष्टव्य है।

सरकार ने गुड़गावां के उन कसीरुलतादाद (बहुसंख्य) मेवों को उनके मकानात व कृषि भूमि पर बहाल कर दिया जो पाकिस्तान से वापिस आए थे ... हालात की यह साजगारी इतनी मुफीद साबित हुई कि कई हजार मेवातियों को पाकिस्तान से वापिस खेंच लाई। (नई राह पृ. १२-१३ मौलाना इलियास १९५५)

" इनकलाब १९४७ ने मेव कौम को पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में तकसीम कर दिया। जून १९४८ तक मेव पाकिस्तान से आते रहे और इन्हें दोबारा बसाया गया (मेवकौम और मेवात पृ. १६) दोबारा आबादकारी के काम की शुरुआत की सूचना जब पाकिश्तान में मुहाजरीन को लगी तो इनकी वापिस बहुत बडी संख्या भारत लौट आई और जिनके मकान जमीन खाली थे वे उन्हीपर और जिन पर पंजाब के आए शरणार्थी बस चुके थे, उन्हें बदले के और मकान जमीन अलाट करके यहां बसा दिया गया। (तारीख मेव छत्री ५२८)

कुछ लोगों का मानना है। कि सरदार पटेल, गांधी जी, की इस नीति से सहमत नही थे उनका मानना था कि जब बटवारा मजहव के आधार पर हुआ है, पाकिस्तान से लाखों हिन्दु अपना सर्वस्व लुटाकर अपनी बहन बेटियों के लुटे उजडे सतीत्व व सुहाग लेकर परिजनों की निर्मम लाशों के ऊपर से गुजर कर बाढ की भांति भारत में प्रवेश कर रहें हैं, मानव टिड्डी दल उमडा चला आ रहा है तो फिर मेवों को आग्रह पूर्वक यहां रोके रखने का क्या औचित्य है ? वैसे भी मेवों के अतीत के आधार पर उनका कहना था कि अगर गांधी जी अपनी लोकप्रियता की सनक में इन्हें भारत में रोकना ही जरूरी समझते हैं। तो कहीं अन्यत्र ले जाकर बसा दिया जाए कम से कम राजधानी दिल्ली की नाक के नीचे तो कतई न बसाया जाय। वैसे आज का यह भी सुविदित सत्य है कि पाकिस्तान की इस्लामी सत्ता ने भी मेवों को सारे पाकिस्तान में बिखेर कर बसाया है कहीं भी बडा संख्या समूह किसी भी एक स्थान पर इकट्ठा नहीं बसने दिया गया। सरदारपटेल के सम्बन्ध में मेवों की यह स्पष्ट धारणा थी

"सरदार पटेल दक्षिण पंथियों के दरपर्दा लीडर थे और नेहरू व उनके सहयोगी कांग्रेसी अपने 'शत्रु' को समझने में पूरी तरह नाकाम हो चुके थे।" (मेव क्षत्री पृ ४६४)

वैसे गांधी जी की डायरी में मेवों के सम्बन्ध में व्यक्त उनके विचार में उनकी कुछ और ही भावना का संकेत मिलता है, मास्टर अशरफ ख M. A. अपनी रचना "मेव कौम और नेवात" में लिखते हैं

सही तरीका यह होगा कि मेव कौम का सुधार किया जा और उन्हें एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा की जाय (पृ० १७) तारीख मेव क्षत्री पृ० ५२२

इसका निहितार्थ स्पष्ट है कि गांधी जी मेवों को 'अच्छा नागरिक' नही मानते थे! गांधी बेचारे का दुर्भाग्य यह रहा। कि जिस वर्ग क

प्रसन्नता पाने को उन्होने राष्ट्रीय अखण्डता तक की बलि चढा दी उसी वर्ग के शीर्ष पुरूष मौहम्मद अली जौहर ने गांधी व्यक्तित्व का मूल्यांकन इन शब्दों में किया था कि :–

मैं गांधी जी की अपेक्षा एक फासिक व फाजिर (व्याभिचारी) मुसलमान को उसके 'कल्मागो' (मुसलमान) होने के कारण श्रेष्ठ समझता हूं।

गांधी के नाम की दुहाई देने वाले, स्वयं को भारत में गाँधी जी की अमानत और 'वास्तविक' गाँधीवादी बताने वाले मेवों की गांधी निष्ठा व आस्था तथा कृतज्ञता का स्पष्ट रूप यह है कि मेवात में 'स्वतन्त्रता' प्राप्ति के समय से रोजाना निरन्तर गांधी जी की जीवन प्राण गो की हजारों की संख्या में हत्या निर्वाध होती चली आ रही है, गांधी जी के आराध्य आस्था पुरुष राम के स्थान पर विदेशी आक्रान्ता, राम मन्दिर जन्म स्थल के ध्वंसक बाबर को महत्व दिया जाता रहा है। 1946 के चुनाव के समय में मेवात की गली गली में बच्चे की जबान पर "जब कायदे आजम जिन्ना/जिन्दा है तो गांधी की तमन्ना कौन करे" का नारा गूंज उठा था आज स्वर्ग में से गांधी जी की आत्मा पुकार कर यही कह रही है :--

पढी नमाजे जनाजा हमारी गैरों ने।
मरे हम जिनके लिये वे रहे वजू करते ॥

मेवात के जाने माने विद्वान मौलाना इलयास मेव लीडरों की निष्ठा दृढता, वचनबद्धता के संदर्भ में अपनी रचना नई राह में विश्लेषणात्मक टिप्पणी करते लिखते हैं।

हमारे ये लीडर और चौधरी साहिबान भी किसी खास मंजिल के मुसाफिर नही हैं. बल्कि हवाओं के उलट फेर के साथ मुर्गा

बाद नुमा की तरह वे अपना रुख बदलते रहते हैं मौका परस्त
इनके अन्दर कूट कूट कर भरी है जब फिरंगियों का राज
था तो इनसे बढकर कोई पिट्ठु और टोडी नहीं था। कांग्रे
के सत्ता मे आते ही वे गांधी के सच्चे भक्त बन गए और अ
जब कि सोशलिज्म का कुछ चर्चा हो रहा है। तो ये माक्स
लेनिन, स्टालिन व माउत्सेतुगं के गीत गाने लगते हैं औ
अगर खुदानख्वास्ता हिन्दु फिरका परस्ती के हाथ में मुल्
की बागडोर आ जाय तो ये काबुल से कोलम्बो व कराची
कम्बोडिया तक फासिस्ट हिन्दु राज के लिए फासी ग
लगायेंगे और जनेऊ पहनकर राम नाम का जाप करते हु
गंगा जी स्नान करने को जाएगें। (नई राह पृ. १

मेवात की मुल्लाई शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में आपकी अन्तर्वेद
निम्न शब्दों में फूट पडी है मैं समझता हूं मेवात की जीवन व्यवस्था
लादीनी (आचार हीनता) के लिये यही मुल्लाई तस्वीरे–दीन जिम्मेव
है। (१६)... खसूसन मेवात का मकतबी निजाम तो एक काबिले इबर
(लज्जा स्पद) दृश्य प्रस्तुत करता है। हमारे शिक्षा प्रेमी किसी भी कीम
पर छटी सदी हिजरी के माहौल से निकलने के लिये तैयार नहीं है। इ
शिक्षा प्रणाली में एक "भिक्षुक वृति" की गन्ध आती है .....पाठ्यक्र
की दृष्टि से वही घिसी पिटी व्यवस्था दृष्टिगोचर होगी जो मस्जिदों
मदरसों के लिए पेशेवर इमाम व मुल्ला तो पैदा कर सकती है वैचारि
क्रान्ति लाने वाले संघर्षशील कर्तव्य निष्ठों को जन्म नही दे सकती!
(नई राह पृ. २३)

येही लेखक महोदय इसी रचना में १९४७ में मेवों की भूमिका त
उससे उत्पन्न प्रभाव के सम्बन्ध में लिखते हैं :–

··यदि मेवातवासियों (मेवों) ने दृढ शुद्धहृदयता से उन मानवीय उसूलों को अपनाया होता और हर प्रकार के पक्षपात व साम्प्रदायिकता से दूर रहे होते तो निश्चय ही न तो फसादात की आग ही भड़कती और नहीं हमारे पलायन की नौबत आती। हमारे पड़ोसी हिन्दु भाइयों ने हमारे उच्च (राष्ट्रीय) चरित्र व विश्वनीयता की मधुरता को अनुभव किया होता तो निश्चय ही वे हमारी सुरक्षा के लिए स्वयं आक्रान्ताओं का मुकाबला करते, और पलायन कर रहे लोगों के रास्ते में हिमालय बन कर खड़े हो जाते। (नई राह पृ. २८)

—: मेवात में हिन्दुओं की कथित सुरक्षा :—

1947 में जब सारा देश गृहयुद्ध की लपटों में घिरा था, राजनीति द्वारा पैदा किये गये मजहबी उन्माद ने पुश्त दर पुश्त के सदियों पुराने भाई-चारे, शिष्टता व सहानुभूति को न केवल समाप्त प्रायः कर दिया था बल्कि स्नेह का स्थान शत्रुता, विश्वास का स्थान छलकपट, सौहार्द का स्थान घृणा तथा दया व करुणा का स्थान निर्ममता ने ले लिया था मानवीय संवेदनाएं धूलिघूसरित हो चुकी थी, सर्वत्र नग्न बर्बरता का साम्राज्य था, मानवता असहाय चीत्कार कर रही थी ऐसे अराजक काल में कहीं भी कुछ भी घटित हो जाना न असम्भव कहा जा सकता था ! न अप्रत्याशित ही। यद्यपि यह ठीक है कि देश की विभाजक सीमा रेखा जैसा पहले लिख आये हैं अप्रत्याशित बन जाने के कारण मेवात को मुल्तान शुजाआबाद, रावलपिंडी, या नवाखाली व चटगांव नही बनाया जा सका अन्यथा इस कुसमय में मेवात में भी अनेक रोमांचक, वीभत्स घटनाएं अवघटित हुई हैं कितने ही अल्पसंख्यको के कतल व करोडो की सम्पत्ति लूटी गई है। वैसे काल दृष्टि से इन्हें हम एकदम अप्रत्याशित नही

रहे ! हम यह भी नही कह रहे कि ये हुई ही क्यों ? क्योंकि यह काल जन्य थी । किन्तु उन लज्जास्पद, लोम हर्षक, घटनाओं को जानबूझकर सर्वथा अनदेखा करके उल्टा दर्पोक्ति रूप घोषित किया जाना कि :–

देश के अन्य भागों में चाहे कहीं भी कुछ भी हुआ हो मेवात में पूर्ण शान्ति रही, किसो भी अल्पसंख्यक (हिन्दु) की ओर आंख उठाकर भी नही देखा गया !" यह सर्वथा मिथ्या है ।

इस सन्दर्भ में मौलाना अब्दुल शकूर लिखते हैं "यह बात इन्तहाई काबिलेफखृ (विशेष गर्व करने योग्य) है कि इस दौरान में अन्दरूने मेवात अमन व अमान रहा किसी प्रकार का फसाद नहीं हुआ यहां तमाम हिन्दु हरिजन महफूज रहे । इनके माल असबाब पर कोई आंच नहीं आने दी गई ।" (तारीख मेव क्षत्री पृ. ५१४)

ऐसी ही गर्वोक्ति मा० अशरफ करते लिखते हैं "जि० गुडगावां में फसादात सरहदों पर हुये जहां मेब, जाट, अहीरों की सरहदें मिलती थी हिन्दु आबादी मेवात में पूर्णतः सुरक्षित थी"

(मेव कौम और मेवात पृ. १६२)

अस्तु ! उक्त प्रकार की दर्पोक्तियों के संदर्भ में मेवात में घटित ऐसी कुछ लज़्जास्पद घटनाओं की चर्चा विषय संगत आवश्यक है । एक बहुत ही संक्षिप्त सी झलक निम्न है !

1947 में पुनहाना मे सोहना के श्री रोशनलाल अध्यापक पढाते थे उन्होने अपने परिचित सोहना के ही एक मुसलमान ड्राईवर की गाडी पुनहाना से सोहना जाने के लिए 7/– प्रति सवारी किराये पर ली ! इस गाडी में 6 व्यक्ति सवार होकर चल पडे, जैसे ही गाडी पिनगवां पहुंची मुसलमानों की भीड़ खडी स्वागत को तैयार मिली क्योंकि ड्राईवर महोदय पहले ही पिनगवां यह व्यवस्था कर आये थे ! गाडी रोक कर निम्न 6 व्यक्ति नीचे उतार कर कतल कर दिये गये !

१. रोशनलाल अध्यापक निवासी सोहना ५० वर्ष (२) ग्यासीराम सुनार पुन्हाना ६० वर्ष(३) पं० रामचन्द्र s/o शंकर ४० वर्ष (४) भूरजी s/o शंकर ३८ वर्ष (५) रूपचन्द s/o रामचन्द १६ वर्ष (६) ओमप्रकाश s/o सूरज मिस्त्री १४ वर्ष ! सिवाय रोशनलाल के सभी पुन्हाना निवासी थे प्रत्यक्ष दर्शियों का कहना है कि १४ वर्षीय लडके ओम प्रकाश ने घायल अवस्था में जान बचाकर भागने का प्रयास किया तो उसके हाथ पांव रस्सियों से बांधकर काँटों की बाड़ लगाकर जिन्दा उसमें भून दिया गया ऐसे ही पुन्हाना के ही मूलचन्द उपनाम मूला अड़िया अपना कुछ सामान व एक मशीन (कोका कोला की बोतल भरने वाली) ऊँट पर लाद कर होडल जा रहा था कि सिंगार के पास उसका माल से लदा ऊंट कब्जे में लेकर उसे काट दिया गया । निकटस्थ ग्राम सीहरी के ४०वर्षीय लाला झग्गडमल को गांव के ही मेव "सुरक्षित" स्थान पर पहुंचाने का विश्वास दिलाकर सामान ऊंटनी पर लदवाकर अपने साथ ले गये । रास्ते में लाला जी के टुकडे-२ करके कुऐं में डाल दिये और ऊंटनी पर कब्जा कर लिया । रूपनगर नाटौली के 60 वर्षीय लाला खूबीराम अपनी लडकी से मिलने जुरहरा जा रहे थे कि जुरहरा के निकट ग्राम जीराहेडा के जंगल में अल्ला हुअकबर की चपेट में आकर स्वंग सिधार गये । पुनहाना के 75 वर्षीय वयोवृद्ध इलाके की मानी हुई हस्ती लाला रामचन्द्र जी चौधरी बीमारी की हालत में उनके अपने मकान के अन्दर ही कतल कर दिये गये, निकटस्थ गांव फतेहपुर (राज.) के दो नौजवान भाई श्री भजनलाल एवं जगन लाल निकट के जंगल मे कतल कर दिये । निकस्थ गांव अमरूका (राज०) के 50 वर्षीय लाला हब्बड अग्रवाल बोलखेडा गांव के रास्ते में काट दिये गये । गांव सोमका (राज.) के श्री किशन लाल (40) श्री मन्नुलाल (52) सुपुत्र श्री बीधूराम बैलगाडी में सरसों वेचने

निकटस्थ कस्बा पहाडी को लेजा रहे थे। गाडी हांकने वाला 20 वर्षीय गांव सोमका का ही सोनी नामक बाल्मीकि था रास्ते में गाडी लूटकर तीनों काट दिये। किशन व मन्नु की तो घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई सौनी गम्भीर घायल अवस्था में भाग निकला। किन्तु दो सप्ताह बाद उसने भी दम तोड दिया। फिरोजपुर झिरका का 18 वर्षीय सुखराम सैनी माहौली गाँव के निकट काट दिया गया। तिजारा (अलवर) में श्री आशा राम जी की हवेली में सैंकडो हिन्दु स्त्री, पुरूष, वृद्ध व बच्चे सुरक्षार्थ शरण लिये हुये थे कि उन्मादी भीड ने हवेली तोडकर सभी को मौत के घाट उतार दिया। ये सारी घटनाऐं केवल २०–३० कि० मी० क्षेत्र की हैं बाकी भी मेवात में अन्य ऐसी घटनाओं की संख्या सैंकडों में है।

भरतपुर शासन के हरियाणा सीमावर्ती क्षेत्र में हिन्दु हत्याओं को लहर ने भरतपुर महाराज के छोटे भाई गिर्राज सिंह (बच्चूसिंह) को सक्रिय होने को विवश कर दिया था। एक दशक पूर्व मेवों द्वारा 'प्रजा-परिषद' के नाम से चलाए गये राज्य विरोधी आन्दोलन से भरतपुर सरकार पहले ही परेशान थी इस ताजा हिन्दु हत्या लहर ने और जलती पर तेल का काम कर दिया। यदि उस काल खण्ड में बच्चूसिंह सक्रिय न हुए होते तो न जाने मेवात चण्डी और कितने लोगों की मुण्ड मालाऐं सजाती। हम यह पहले भी लिख चुके हैं कि इस प्रकार की घटनाऐं न तो अप्रत्याशित थी न ही अस्वाभाविक। यह सब काल जन्य थी। प्रस्तुत आलेख में इनका क्रमबद्ध विवरण हमारा अभीष्ट नहीं है यह तो मेव बुद्धिजीवियों की उक्त दर्पोक्ति कि 'मेवात में हिन्दु पूर्ण सुरक्षित रहा' के संदर्भ में कुछ एक घटनाऐं उदधृत करने को विवश होना पडा है। सामान्यतः उस काल खण्ड में हिन्दु व मेव दोनों ही वर्ग के मध्य स्थित अल्पसंख्यक वर्ग सुरक्षित भी रहा और काल कवलित भी हुआ। दोनों

ही वर्गों द्वारा अल्पसंख्यकों को सुरक्षा भी दी गई और यातनाएं व उत्पीडन भी हुए। स्वयं मेरे घर पर 25 मई 1947 की लडकी की शादी थी जो गांव के मेवों के सहयोग से निर्विघ्न सम्पन्न हो सकी। बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यकों की यह "सुरक्षा" किसी पर अहसान या गर्वोक्ति का आधार न होकर सामान्य मानवीय नैतिकता का पालन ही कही जा सकती है। हमने वे दृश्य भी अपनी आंखों से देखे हैं जब पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों को हिन्दुओं ने अपने निकटतम सम्बन्धी व रिश्तेदारों की भांति भाव विभोर हृदय से, अश्रुपूरित नेत्रों से भाव भीनी विदाइयां दी हैं। आज भी पाकिस्तान स्थित कई मेव बन्धुओं से मेरे स्नेह पूर्ण आत्मीय सम्बन्ध हैं। आज तक भी सदभावना पूर्ण स्नेह सिक्त पत्राचार सम्बन्ध बराबर बना हुआ है। इस सब की पृष्टभूमि में एक महत्वपूर्ण विचारणीय बिन्दु यह है कि जहां मेवात के सीमावर्ती हिन्दु बहुल गावों पर 3 जून से पहले दिन रात मेवों के आक्रमणों की अटूट शृखंला चल रही थी वह 3 जून 1947 को पाकिस्तान निर्माण की विधिवत घोषणा के होते ही एक दम आश्चर्य जनक नाटकीय मोड ले गई। रणनीति अक्रामकता से हटकर सुरक्षात्मक धारा पर आ खडी हुई। इस के पीछे यही रहस्य था कि 3 जून से पहले मेवों को पक्का विश्वास यही था कि चूंकि जिन्ना की पाकिस्तान मांग में पूरा पंजाब शामिल है अतः मेवात पाकिस्तान का ही भू भाग रहेगा। इसलिये इनका इस क्षेत्र को हिन्दु बहुल गाँवो से पाक साफ कर वास्तविक पाकिस्तान का रूप देना ही अभीष्ट था। मेव देहातों के बीच में बसे हिन्दुओं के सम्बन्ध में यह सुनिश्चित ही था कि ये सब तो इस्लाम और पाकिस्तान का ही माले गनीमत होंगें। भागकर जाएगें भी कहां ये सब इस्लाम की संख्या वृद्धि ही तो करेगें, नही तो जब भी हम जो कुछ करना चाहेंगे कर गुजरगें।

पाकिस्तान में भी तो यही कुछ हुआ है। इसी आशंका से मेवात में बसे हिन्दुओं का काफी बडा भाग अपने अपने अवसर जुटाकर अपने निवास स्थलों को छोडकर हिन्दु क्षेत्रों को पलायन कर गया था। मेवात के प्राय: सभी कस्बे पुन्हाना, पिनगवां, फिरोजपुर झिरका, नूह, बिछोर, इत्यादि पूरी तरह हिन्दुओं से खाली हो चुके थे। अंधेरे उजाले लुक–छिपकर भागने वाले केवल अपने प्राण ही साथ ले जा पाए थे। अनेक व्यक्ति अपने गन्तव्य पर पहुंचने से पूर्व ही रास्ते में "अल्लाहो अकबर" का शिकार होकर रह गये थे।

यदि राजनीतिक योजना अनुसार सारा पंजाब पाकिस्तान में चला गया होता तो मेवात छोडकर गये लोग जीवन भर अपने घरों के दर्शन कर ही नही सकते थे! संयोग से यह क्षेत्र भारत ही रहा और पलायन कर जाने वालों को नियति ने पुन: अपने परित्यक्त घरों के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करा दिया। किन्तु स्थिति शान्त हो जाने पर जब वे लोग वापिस अपने घरों पर आये तो जिन घरों को वो पूरी तरह भरा पूरा पूर्ण स्वस्थ दशा में छोड गए थे आज उन खाली घरों को टूटी-फूटी कहीं जली फुंकी खण्डहर दीवारे आंसू बहाती हुई अपने बिछुडे गृह स्वामियों का स्वागत करने को शेष बची थी। बिछोर आदि अनेक कस्बों में आज भी उस समय की अनेक जली व टूटी दीवारे मूक भाषा में सारी करुण गाथा सुनाती देखी जा सकती है। बिछोर के बारे में उल्लेख है – 1947 से पूर्व इस कस्बे में बेहद रौनक थी, इसे बलवाईयों ने नजरे आतश कर दिया (मेव क्षत्री पृ १७) 1947 में तो दंगा खुला साम्प्रदायिक था किन्तु 1857 का विप्लव तो साम्प्रदायिक नही विदेशी अंग्रेजों के साथ खुला राष्ट्रीय संघर्ष था, परन्तु मेवों ने तब भी मेवात के कस्बों का निर्ममध्वंस व सर्वनाश किया था!

ऐसा हम नही कह रहे, मौलाना अब्दुल शकूर लिखते हैं :–
"मेवों ने फौरन ही तावडू, सोहना, फिरोजपुर, पुन्हाना, पिनगवां और नूह को तबाह व बर्बाद कर दिया। (मेव क्षत्री पृ० ४५१)

मेवों ने तावडू, सोहना, फिरोजपुर, पुन्हाना, पिनगवां को ताख्त व तराज (ध्वस्त) किया। नूह में एक लम्बी लड़ाई हुई मेव नूह पर हमला कर रहे थे और खानजादे व पुलिस कस्बे की रक्षा कर रहे थे !

(ता० मेव-क्षत्री पृ० 462)

हम देखते हैं, जहां एक ओर देश का सारा हिन्दु समाज दिल्ली की जर्जर मुस्लिम सत्ता की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व बलि चढा रहा था, वहीं दूसरी ओर मेवात में मेवों द्वारा हिन्दु कस्बों का निर्ममध्वंस किया जा रहा था। कहते है कि फांसी पाने वाले मेवाती 'कौमी शहीदों' में अधिकांश वे लोग थे जिन्हें उक्त कस्बों की हिंसा, रक्तपात व लूटमार के अपराधों में फांसियां लगी थी !

अस्तु ! 3 जून के बाद भारत–पाकिस्तान की सर्वथा अप्रत्याशित सीमारेखा ने कल्पना लोक के सारे ताने बाने को ध्वस्त कर दिया। सारा उन्मादी जनून आश्चर्य व हताशा में बदल गया :–

टूटा ख्वाब खली आंखे, देखा सपनों का महल ढहा,
जन्नत के बागों का नक्शा था दोजख में बदल चुका।

इस अप्रत्याशित सीमांकन ने मेवों की 'आक्रामक' रणनीति को सुरक्षात्मक नीति में बदल दिया। अब सारा ध्यान आक्रमणों से हटकर सुरक्षा में सिमटकर रह गया !

(१९४७ का सन्धिकाल)

वैसे तो सामान्यत: काल चक्र के गति क्रम में वर्तमान का प्रत्येक

क्षण भूत व भविष्य का योजक सन्धिकाल होता है किन्तु व्यक्ति की जीवन यात्रा में कुछ क्षण ऐसे महत्वपूर्ण भी आते है जो सारे भविष्य को अपरिवर्तनीय विशेष दिशा प्रदान कर निर्णायक रूप में प्रकाशमान या अन्धकार मय बना छोडते हैं। उस क्षण की जरा सी सावधानी या लापरवाही सारे भावी जीवन का चित्र ही बदल देती हैं। जैसे कि हम सहज भाव से मार्ग में चले जा रहे है. क्षणिक असावधानी के कारण केले के छिलके से पांव फिसल जाता है. पांव टूट जाता है आखिर कटवाना पडता है। परिणामतः एक क्षण की लापरवाही सारे जीवन भर के लिये विकलांग बना छोडती है, भविष्य के सारे स्वर्णिम स्वप्न धूलि धूसरित हो जाते हैं। हम अपनी मूर्खता व लापरवाही को 'भाग्य' कहकर सन्तोष कर लेते हैं।

इसी प्रकार राष्ट्रों की लम्बी जीवन यात्राओं में ऐसे सन्धिकाल रूप महत्वपूर्ण कुछ अवसर आते रहते हैं जो राष्ट्र के लम्बे भविष्य को ऐसी दिशा प्रदान कर जाते हैं जिसे शताब्दियों तक भी बदला जाना सम्भव नही हो पाता। राष्ट्रीय इतिहास धारा में ऐसे अवसरों को 'सन्धिकाल' की संज्ञा दी गई है। भारत के राष्ट्र–जीवन में भविष्य के निर्णायक ऐसे ही पृथ्वी राज – मोंहम्द गौरी काल, महाराणा प्रताप – मानसिंह काल, शिवाजी–जयसिंह काल, 1857 का क्रांति काल आदि थे ठीक ऐसा ही 1947 का राष्ट्र विखण्डन काल भी राष्ट्र के जीवन इतिहास का असाधारण सन्धिकाल था। इस काल खण्ड में यदि बीसवीं सदी के कायरता-पुरुषोत्तम स्वयंभू राम छद्मधर्मनिरपेक्षता के माया मृग मारीच के पीछे नहीं भागे होते तो आज राष्ट्रीय अस्मिता. साँस्कृतिक गरिमा रूपी माता जानकी रावण की अशोक वाटिका में आत्मोत्सर्ग के लिये तारा–ग्नि की याचना करती दृष्टिगोचर न होती बल्कि अयोध्या के राजप्रासाद में विश्वपूज्य अराध्य देवी के रूप में अधिष्ठित होती। विडम्बना यह है

कि वर्तमान 'राम' के गिर्द ऐसे हनुमानों की सेना खडी हो गयी जो लंका की बजाय अयोध्या फूकंने को ही सन्नध्द खडे हैं, बडे उत्सुक हैं ।

यदि हमने उस समय राष्ट्र जीवन के इतिहास – सत्य को स्वीकार किया होता तो आज स्वतंत्रता के आधी सदी बाद की सन्तति को क्षत-विक्षत राष्ट्र की करुण पीडा सर पर ढोने को नहीं मिलती, एक गौरव-शाली आराध्य देव राष्ट्र–मन्दिर पूजा करने को मिलता । छद्म धर्म-निरपेक्षता का दैत्य माता के हाथों की बेडियाँ नही काट सका तो हाथ ही काट डाले । सत्ता लोलुप कांग्रेस की विगत कई दशकों की तुष्टीकरण नीति तथा राष्ट्र द्रोहियों द्वारा योजनाबद्ध चलाये गये आन्दोलनों के फलस्वरूप हुए भारत विभाजन के बाद भारत में रहने वाला कट्टरपंथी मुस्लमान अपने अतीत की भूमिका, राष्ट्र विरोधी मानसिकता, पाकि-स्तान निर्माण में सक्रिय योगदान पर कुछ आत्मग्लानि व संकोच का अनुभव कर रहा था अपराध–बोध पीडा रह रहकर भावी अनिष्ठ की आशंकाएँ हृदय पटल पर उभार रही थी । उन्हें यह भी संशय सताने लगा था कि चूंकि देश का बटवारा मजहब के नाम पर हुआ है और बहुसंख्यक हिन्दु समाज पराजय–बोध से मर्माहत एक चोट खाये शेर की तरह छट पटा रहा है ऐसी दशा में :–

चोट खा सोया जब सिंह उठता है जाग,
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुध्द है ।

इसलिये यह भी सम्भावित है कि शायद कांग्रेस भी भविष्य में अपनी चिरन्तन हिन्दु विरोधी व परम्परागत मु० पोषक नीति का अनुसरण उतनी कठोरता से न करना चाहेगी जिस पर वह अपने जन्म–काल से आज तक चलती आ रही है ! किन्तु कांग्रेस ने भारतीय मुस्लमानों में व्याप्त इस संशय व सन्देह को तत्काल ही समाप्त कर दिया, जब जून

48 तक पाकिस्तान से वापिस भारत लौट आने वालों को उनकी छोड़ी गई सम्पत्ति का उन्हें पूर्ववत स्वामीत्व प्रदान करने की घोषणा कर दी। इस घोषणा ने मेवों की सारी मानसिक कुण्ठा को स्फूर्ति में बदल दिया, साथ ही देश की हत्या करने वाली मुस्लिम लीग को वैधानिक मान्यता प्रदान कर मानों उसकी पिछली गतिविधियों व कार्यकलापों को न केवल क्षमा ही कर दिया बल्कि एक तरह से उसे भविष्य में भी वही सब कुछ करते रहने का 'अधिकार' दे दिया गया जो अतीत में करती रही थी ! मुसलमानों को खुश करने को वीर सावरकर जैसी युग विभूति को लाल किले के तहखानों में डाल दिया, पाकिस्तान को 55 करोड रुपया दिलाने को "बापू जी" जान की बाजी लगा बैठे ! गौहत्या को परोक्षतः मुसलमानों के अधिकार के रूप में स्वीकार कर लिया गया । काश्मीर में शेख अब्दुल्ला जैसे ... .. का राज्याभिषेक कर दूध की रक्षक बिल्ली बना दी गयी ! इसी शेख अब्दुल्ला के हाथों डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी की हत्या कराकर राजनीतिक 'कांटा' सदा के लिये साफ करा दिया गया । शेख को सत्ता अमरत्व प्रदान करने को काश्मीर के लिये राष्ट्रघाती धारा 370 का विशेष प्रावधान संविधान में जोड दिया गया ! धारा 370 का वैधानिक स्वरूप व तकनीकी इतिहास भी दृष्टव्य है ।

26 अक्तूबर 1947 को काश्मीर का भारत में विलय हुआ था । तीन वर्ष पश्चात 1950 में इसे भारत के अन्य राज्यों से भिन्न विशेष दर्जा देकर अलग से धारा 370 जोडकर विवादास्पद बना दिया गया ! जब संविधान में धारा 370 जोडने का प्रस्ताव नेहरू जी ने संविधान निर्माता डा० अम्बेडकर से रखवाना चाहा तो,

उन्होने इसे घातक बताते हुए पेश करने से दो टूक मना कर दिया, वे इस्लामी मानसिकता व चरित्र से परिचित थे ।

उनका मानना था कि " मुसलमान सुधार के विरोधी हैं उनके अन्दर तिलमात्र भी लोकतन्त्र प्रवृति नही है। दुनियां भर में उनकी नीति प्रगति विरोधी रही है " (थॉटस औन पाकिस्तान १६४०) अतः नेहरुजी ने धारा ३७० का प्रस्ताव काश्मीर मामलों के राज्यमंत्री गोपाल स्वामी आंयगर से प्रस्तुत करवा कर पारित करा दिया। ३७० की कुछ विधायें निम्न हैं।

(क) वहां भारतीय दण्ड संहिता **I.P.C.** लागू नही होती।

(ख) भारत के राष्ट्रध्वज का अपमान अपराध श्रेणी में नही आता।

(ग) केन्द्र द्वारा नियुक्त या अन्य किसी (भारतीय) 'विशेषाधिकारी' को वहां मतदान का अधिकार प्राप्त नहीं है।

(घ) राष्ट्रपति भारतीय संविधान की किसी भी धारा को वहां लागू करने का अधिकार नहीं रखता।

(ण) जम्मू का कोई निवासी (भारतीय की तो बात ही क्या है) भी वहाँ जमीन नही खरीद सकता।

(च) बहुचर्चित भारतीय "अल्पसंख्यक आयोग" वहां प्रभावी नही है (क्योंकि वहाँ अल्पसंख्यक सुविधा का अधिकारी हिन्दू है) इत्यादि

(यह है भारत के "अभिन्न" अंग का संवैधानिक समन्वित स्वरूप)

पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर के विस्थापित 80 हजार हिन्दुओं को भारतीय कश्मीर में नहीं जम्मू में बसाया गया। परन्तु आज तक भी वहां की नागरिकता प्रदान नही की गई। पिछले 46 वर्षो में चीन से आये कज्जाक मुस्लमानों को घाटी में बसाकर उन्हें वहां की नागरिकता प्रदान कर दी गई है, जबकि चीनी अत्याचारों से पीडित लद्दाख में आये तिब्बती बौद्धों को आज तक नागरिकता नही दी गई है। जब इस राष्ट्र-घाती धारा 370 का देश व्यापी विरोध हुआ तो नेहरू जी का कहना था कि 'समय के साथ साथ यह धारा घिसते-घिसते स्वंय ही समाप्त हो जायेगी। (27-11-63 लोकसभा में नेहरू जी का वक्तव्य)

इतिहास साक्षी है कि समय के साथ घिसकर यह धारा समाप्त हो रही है या घिस घिसकर देश को समाप्त करती जा रही है। अभी गत दिनों भारत की यात्रा पर आये इस्राईल के विदेद मंत्री श्री शिमोन पेरेज भी इस विघातक धारा 370 को समाप्त करने का भारत सरकार को सुझाव दिया था। जब तक सरदार पटेल जीवित रहे नेहरू जी की निरंकुशता पर कुछ नियन्त्रण रहा। यदि पटेल उस समय साहस न संजोकर नेहरू जी की ओर ही देखते रहे होते तो निःसन्देह आज निजाम हैदराबाद काश्मीर से भी ज्यादा भयंकर नासूर बन गया होता। अयोध्या समस्या के ही समान्तर सोमनाथ का पुनरूद्धार सरदार पटेल व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के अदम्य राष्ट्रनिष्ठा व साहस–प्रतीक के रूप में सदैव इतिहास में अमर रहेगा। स्मरण रहे 1951 में सोमनाथ का शिलान्यास करते समय डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के शब्द थे कि ······ ऐसा करके :–

"आज हम बारह सो वर्षो के कलंक को धो रहे हैं"

नेहरू जी के अति समीप रहे श्री एस. के. पाटिल तो अपनी आत्मकथा में यहाँ तक लिखते हैं ······ कि नेहरू जी डा० राजेन्द्र प्रसाद जी को राष्ट्रपति बनाये जाने के इतने विरुद्ध थे कि इस विषय पर आपने सरदार पटेल को लिखे गये एक पत्र में अपने त्याग पत्र तक की धमकी दे दी थी। (पंजाब केसरी 12–11–86)

स्मरण रहे सोमनाथ महमूद गजनवी के 1026 के ध्वंस के बाद अनेक बार लुटेरों द्वारा तोडा व राष्ट्रभक्तों द्वारा बनाया जाता रहा था। अन्तिम बार 1706 में गुजरात के उन्तालीसवें सूबेदार मो० आजम ने औरंगजेब के इस आदेश से तोडा था कि ··· सोमदाथ मन्दिर को इस तरह नष्ट कर दो कि फिर से न बनाया जा सके। (बम्बई गजेटियर-खण्ड 2 पृ०292) तब किसी को सोमनाथ मस्जिद रक्षा समितियां गठित करने व आन्दोलन चलाने का साहस क्यों नही हुआ ?

अत: सरदार पटेल के स्वर्गवास हो जाने व तथा कथित "धर्मनिरपेक्ष" संविधान की 'व्यावहारिक परिभाषा' स्पष्ट हो जाने के साथ ही भारत के मुसलमानों को सुनिश्चित हो गया, और ऐसा हो जाना स्वाभाविक भी था कि परिवर्तन के अभूतपूर्व त्रासद झंझावात ने राष्ट्र का केवल भूगोल बदला है अन्य सभी कुछ पूर्ववत ही है। राष्ट्र नायकों का ?

"अब भी उनकी सरगम वही सितार वही है।"

"धर्मनिरपेक्षता" का वस्तु-चित्र स्पष्ट हो जाने के साथ ही राष्ट्र का भावी राजनैतिक रेखा - चित्र भी साफ होता चला गया। इस से आश्वस्त हो भारत के मुसलमानों ने अपनी आत्मग्लानि, आशंका व मानसिक कुण्ठा को पूर्णत: विस्मृत कर उसी पुराने परिवेश के साथ अपने पूर्व नियोजित इतिहास का पूरी तैयारी व तन्मयता से अगला अध्याय लिखना प्रारम्भ कर दिया।

राष्ट्रीय स्तर पर इस नये अध्याय का समारम्भ 1952 के चुनावों से होता है। जब देश में नई संवेधानिक व्यवस्था ने जन्म लिया। देश के प्रत्येक वयस्क नागरिक को मताधिकार स्वरूप सत्ता निर्माण में समान भागीदारी का सु संयोग प्राप्त हुआ। 1952 के प्रथम चुनाव में यहां मेव बहुल फिरोजपुर झिरका व नूंह दो बिधान सभा क्षेत्रों से क्रमश: चौ० यासीन खां व श्री अब्दुल गनी डार (प्रथम सर्वसम्मत, द्वितीय चुनावों में) निर्वाचित हुए। दोनों क्षेत्रों से बिधायकों के इस चयन ने मेवों के टूट हुये आत्मबिश्वास को नई आशा व स्फूर्ति में बदल दिया। चौ० यासीन इस क्षेत्र के पुराने लीडर थे लेकिन नूंह क्षेत्र के लिये बाहर से आयात किये गये अब्दुल गनी डार एक दम नये और अपरिचित थे। इस से हमारे पीछे व्यक्त हुये विचार की पुष्टि होती है कि चौ० यासीन के अलावा लगभग सब प्रभावशाली मेव नेता यहां से जा चुके थे तभी तो कांग्रेस कोई प्रभावशाली मेव नूह क्षेत्र के लिये नही खोज सकी। परिणामत: मेवात में गौहत्या व हिन्दुओं के धर्मान्तरण की गति जो पिछले कुछ दिनों में

मन्द सी हो गई थी शनैः शनैः फिर गति पकडने लगी और इस के प्रेरक कारण रूप केन्द्रीय सत्ता की छद्म धर्मनिरपेक्षता, तुष्टिकरण की सनक बहुसंख्यक–अल्पसंख्यक वाद की बिभाजक रेखा उसी पुराने रूप में खड़ी कर देना, वोट ठेकेदारी के रूप में जगह–२ सामन्ती काल जैसी दलालों की चौकियां स्थापित करना, दलालों को राजनैतिक संरक्षण व 'प्रभाव' का सम्बल प्रदान करना, इन्ही दलालों की 'सैना' द्वारा सामान्य जनता में अपनी प्रतिष्ठा व आतंक प्रस्थापित कर प्रशासनिक न्याय प्रणाली को पंगु बना देना, इत्यादि यही वह बीजरूप रणनीति थी जिसका परिणाम भारत का वर्तमान चित्र है। यही हुआ है राष्ट्र का इस सन्धि काल के भविष्य का दिशा निर्धारण।

1952 के चुनावों के बाद मेवात में गौ हत्या तेजो से बढने लगी, धर्मपरिवर्तन की गति में काफी तेजी आई उदाहरणतः 1953-54 की दो वर्ष की कालावधि में पुन्हाना के निकटवर्ती मात्र १० किलोमीटर के क्षेत्र में दर्जनो हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया, जसे गांब 'मानौता' के बुदरी व मन्नी नामक हरिजनों के दस सदस्यीय परिवार को जिन में चार युवा महिलाऐं व कई बच्चे थे, मुसलमान बना कर निजामुद्दीन भिजवा दिया गया। ग्राम बौसरू के ४० वर्षीय झम्मन नामक बढई को दीन मोहम्मद बना दया गया। ग्राम भू रयाकी के तत्कालीन सरपंच छज्जु खाँ ने गांव के ही एक १४ वर्षीय बाल्मीकि लडके को मुसलमान बना दिया ऐसी ही घठनाऐं सारी मेवात में आज भी उल्लेखनाय रूप में आये दिन घटित हो रही हैं।

1952 में मेवात के गुडगावां लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के श्री ठाकुर दास जो भार्गव चुने गये थे परन्तु 1957 के चुनावों में कांग्रेस ने यहा से केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अब्बुल कलाम आजाद को (जो 1952 में रामपुर से विजयी हुये थे) खड़ा कर दिया। इनके मुकाबले पर जन संघ के तत्कालीन जिला अध्यक्ष बाबू मूलचन्द जी महेश्वरी एडवोकेट चुनाव

मैदान में थे, दुनिया के सामने मौलाना आजाद की लोकप्रियता प्रमाणित कर उन्हें 'निर्विरोध' निर्वाचित प्रचारित करने की दृष्टि से पं० नेहरू ने श्री महेश्वरी जी को चनाव से हटाने के लिये, सभी हथकण्डे एक-एक करके अपनाये किन्तु श्री महेश्वरी जी की दृढ निश्चयी चट्टान से टकरा कर सारे प्रयास चू -२ होते चले गये, जन संघ ने अपने शैशवकाल में ही इस सीट पर मौलाना जैसे दिग्गज के मुकाबले में लाखों वोट प्राप्त कर कांग्रेसी अहम को करारी चोट दी, राष्ट्रीय स्तर पर जन संघ को उस समय 494 के सदन में मात्र 4 सीटें ही तो प्राप्त हो पायी थी।

1957 के विधायक व सांसद दोनों हो सहधर्मी चुने जाने पर मेवात में अपूर्व प्रसन्नता व्याप्त थी। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दु चेतना ने भी करवटें बदलनो शुरू कर दी थो। हम देखते हैं कि मौलाना क (एक वर्ष बाद ही) निधन के बाद हुए चुनाव में जो कांग्रेस एक वर्ष पहले यहां लाखों वोटों से विजयी हुई थी वहीं 1958 में ४० हजार मतों से हार गई और जन संघ समर्थित श्री प्रकाशवीर शास्त्री विजयी हो गए। इस चुनाव में श्री प्रकाशवीर की विजय के पीछे एक अन्य कारण भी छुपा हुआ था। 1957 की भांति इस बार कांग्रेस के टिकट पर कोई मुसलमान उम्मीदवार न होकर पं० मौली चन्द जी शर्मा (पूर्व जन संघ अध्यक्ष) थे। और नेवों में जो उत्साह व स्फूर्ति गत वर्ष मौलाना के प्रति थी वह शर्मा के लिये नही हो सकती थी।

(राजनीतिक चक्रव्यूह)

1947 में महताब खां, चौ० कंवलखां वगैरा क पाकिस्तान चले जाने के बाद ही यहां मेवात में मु० लीग समाप्त प्राय: हो गई थी, वैसे अब उसकी विशेष आवश्यकता भी नही रह गई थी क्योंकि अब कांग्रेस की सहोदरी जमोयत उलेमा की रणनीति व गतिविधयां तबलीग के 'धार्मिक' परिवेश में न केवल मु० लीग के सारे अभावों की पूर्ति ही कर रही थी बल्कि उससे भो अधिक कुछ कांग्रेस से मुसलमानों क लिये सुविधा रूप

प्राप्त कर रही थी। राजनीति दिशा निर्देशन व प्रक्रियाओं के लि मस्जिदों से फतवे जारी होने लगे थे। 1952 में हुए पहले आम चुना में ही दिल्ली की दीवारों पर एक पोस्टर देखने को मिला जो मुफ्ती-ए आजम किफायतुल्लाह की ओर से मुसलमानों को चुनावी मतदान संदर्भ में 'धर्मादेश' के रूप में था। इसमें उल्लिखित मुख्य चार धारा में चौथी धारा निम्न प्रकार थी।

जो मुसलमान मुस्लिम उम्मीदवार को वोट न देगा वह "इस्लाम का दुश्मन, काफिर और गुनाहगार है"।

दिल्ली के हिन्दी दैनिक 'नवभारत टाइम्स' ने अपने 18-1-52 के अं में पृ० 4 पर इस फतवे की मूल उर्दू कापी की फोटो छापी थी। धर्म-निरपेक्ष कांग्रेस को उस समय इस फतवा-राजनीति पर कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि मुसलमानों का उस समय कोई कांग्रेस विरोधी प्रभाव शाली मंच था ही नहीं। इसलिये ऐसे फतवे परोक्षत: काँग्रेस के सहाय हो थे बाधक नही। फलत: 1952 क चुनावों में लोकसभा के लिये च गये 22 मु० सांसदो में कांग्रेस के 19 P.S.P. के 2 और 1 मु० लीग थे। 1962 में चुने गये 23 मु० सांसदो में कांग्रेस का अनुपात घटक केवल 16 ही रह गया 2 मु० लीग 3 C.P.I. ले गई 2 निर्दलीय ले गये कांग्रेस का स्वप्रभंग होना तब शुरू हुआ जब 1967 में विजयी 30 मु सांसदो में कांग्रेस केवल मात्र 13 रह गये परन्तु अब बहुत देर हो चुक थी. 20 वर्षों में नदियों मे बहुत पानी गुजर चुका था मुसलमानों का कांग्रेस से मोहभंग होता जा रहा था। मु० लीग अपने पांव जमा चुकी थ मुसलमान धर्मनिरपेक्षता के यथार्थ से इन बीस वर्षो में भली भांति परि चित हो चुके थे। विशेषकर 'रबात' काण्ड ने धर्मनिरपेक्षता को बिल्कुल नंगा करके रख दिया था जब 1969 में मोरक्को की राजधानी 'रबात में आयोजित विश्व इस्लामी सम्मेलन में भारत को बडी शान से ······ स्मरण रहे यह विशुद्ध इस्लामी सम्मेलन था इसमें भारत जैसे धर्मनिरपे

को कैसे निमन्त्रण मिलता ? न जाने किन किन के परोक्ष चरण चुम्बन करने पर 23 सितम्बर को रबात स्थित भारतीय राजदूत को बुलाकर सम्मेलन का "निमन्त्रण" दिया गया। जबकि यह सम्मेलन 22 तारीख को ही प्रारम्भ हो चुका था। यह 'निमन्त्रण' लिखित था या मौखिक यह रहस्य ही रहा। दूसरे दिन मोरक्को के विदेश मंत्रालय द्वारा इस निमन्त्रण की सार्वजनिक घोषणा की गई। तत्काल फखरुद्दीन अली अहमद के नेतृत्व में भारतीय सरकारी प्रतिनिधि मण्डल (जो पहले ही-सूटकेस हाथों में उठाये निमन्त्रण की प्रतीक्षा कर रहा था) रबात जा धमका लेकिन इस प्रतिनिधि मण्डल को दूसरे ही दिन बाइज्जत (Go back) का आदेश मिल गया और "धर्म निरपेक्षता" अपनी विजय पताका फहराती बडे गर्व के साथ नयी दिल्ली वापिस बैरंग आ गई। इस सारे घटनाक्रम व सरकार की हीन मानसिकता का भारत के मुसलमानों पर पडने वाला प्रभाव स्पष्ट है। राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस की भागीदारी का ग्राफ दिनोंदिन तेजी से गिरता जा रहा था। 1977 के चुनावों में 32 विजयी मु० सांसदो में कांग्रस के 11 रह गये जबकि लोकदल के मु० सांसदो की संख्या 17 थी। और 91 में 28 मु० सांसदो में कांग्रेसी 10 रह गये। जबकि कांग्रेस के कुल सफल सांसद 225 थे और आनुपातिक दृष्टि से जनता दल के कुल सफल 56 सांसदो में मुसलमान 8 थे। पिछले दिनों 91 के चुनावों के संदर्भ में भारत के विश्व प्रसिद्ध मुस्लिम संस्थान दारुल-उलूम देवबन्द से चुनावों को निर्देशित करने वाला फतवा जारी किया गया था जिसके कुछ अंश निम्न है।

चुनाव में एक तरफ भारतीय जनता पार्टी है जो मुसलमानों की खुली दुश्मन है। दूसरी और वह कांग्रेस है जिसने सत्ता का सहारा लेकर बाबरी मस्जिद का ताला खुलवाया. उस में मूर्तियां रख कर पूजा शुरु करवाई। तीसरी तरफ जनता एस दल है जिसने खाड़ी युद्ध में जालिम अमेरिका को तेल दिया जो इराक को समाप्त करने को लड़ा जा रहा था ..... ऐसी

जमाअतों के पास से गुजरना भी 'हराम' है । एक शख्सियत ऐसी भी है जिसने हक व इन्साफ के लिये कुर्सी को ठोकर मार दी । जिसने सिर्फ बाबरी मश्जिद की खातिर भाजपा से रिश्ता तोड़ लिया, इस्लाम में अहसान फरामोशी सख्त हराम है याद रखो चक्र पर मौहर लगाकर जनतादल को कामयाब बनाना है ।

दुआगो

मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द

यह है धर्म को राजनीति से अलग रखने की क्रियात्मक परिभाषा व्यावहारिक रूप में राजनीति में धर्म का मिश्रण ऐसे फतवों से नहो होता वह तो राम का नाम लेने से ही होता है । यह सर्वविदित काल–सत्य है कि कांग्रेस रूपी विश्वामित्र ने मुस्लिम लीग रूपी मेनका से 'प्रेम' करके पाकिस्तान रूपी शकुन्तला को जन्म दिया और फिर यह विश्वा मित्र आंखों पर हाथ रखकर कहने लगा कि "यह मेरा नहीं" इससे भी आगे बढ़कर भारत विभाजन के ऐतिहासिक 'कलंक' का 'स्वातंत्र्य उपहार' के रूप में सगर्व प्रस्तुतकर इस महात्रासद विभाषिका को मसिमा माण्डित कर ऐस कोलाहलपूर्ण गगनभेदी स्वर में गुजाया कि राष्ट्र की वास्तविक अन्तर्पीडा का स्वर ही नक्कारखान में तूती की आवाज बना कर रख दिया गया ।

देश को स्वर्ग बनाने, घी दूध की नदियां बहाने राष्ट्र को अतीत के गौरवासन पर पुन: प्रतिष्ठित करने के प्रवन्चकों घोषों द्वारा राष्ट्र को आत्म विस्मृत की निद्रा में डूबा कर स्वप्नलोक में पहूंचा दिया विभाजन के ऐतिहासिक राष्ट्रिय कलंक की चर्चा करना भी धर्म निरपेक्ष –ता के विरुद्ध साम्प्रदायिकता घाषित करके बता दिया गया कि .

आह करने की इजाजत है न है फरियाद की
घट के मर जांऊ ये मरजी है मेरे सेयाद की ।

अत: वकरे की रक्षा का ठेका राजनीति के बूचड़ खाने के इंच ज पेशेवर बूचड ने स्वयं संभाल लिया। भारतीय संस्कृति, अस्मिता, गौरव, गरिमा, की रक्षा का ठेका कांग्रेस ने ले लिया।

1947 से पूर्व मेवात के मेवों ने जिस जमीयत उलेमा को मु० लीग के मुकाबले में कभी घास नहीं डाली 47 के बाद वही जमीयत मेवों की एक छत्र प्रवक्ता बनकर उभरी और मेवों ने भी इस स्थिति को सहज स्वीकृति प्रदान कर दी। क्योंकि वह जमीयत मु० लीग का ही परिष्कृत रूप था। (इसकी विस्तार से समीक्षा हम पूर्व कृति इतिहास की अन्त–ज्वाला में सप्रमाण कर चुके हैं) मेवात के राजनीतिक क्षेत्र में कम्यूनिस्ट पार्टी का मात्र नाम ही था। (१) आली मेव के हुसैन खाँ (२) नोटकी के अहमद खाँ (३) घुडाबली के अब्दुल हई (४) सिंगार के सुलेमान और (५) नगीना के मा० रहमत खां। मेवात में कम्यूनिस्ट पार्टी का यही पंचमुखी चित्र था और अन्त तक भी यही रहा। वैसे यह जनाधार से बिल्कुल शून्य थे। सडक हकीमों कीं तरह गली चौराहों पर खडे होकर मजमा लगाने में अभ्यस्त थे। पुलिस व रेवेन्यू या बिजली विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क के इच्छुक कुछ लोग इनके इर्द – गिर्द मंडराते अवश्य देखे जाते थे। प्रत्येक चुनाव, उप चुनावों, में अपने प्रत्याशी अवश्य खडे करते रहे थे परन्तु सदा हारते रहना हो इनकी नियति थी।

1962 में खुर्शीद व तैयब के रूप में मेवात क्षितिज पर दो नये नक्षत्रो का उदय हुआ। नूह से कांग्रेस के खुर्शीद अहमद व फिरोजपुर झिरका से कांग्रेस के श्री तैयब हुसैन (जिन्हें मेवात के एकछत्र नेता चौ० यासीन की प्रतिष्ठा व वर्चस्व पैतृक विरासत में सहज ही प्राप्त था) सफल हुए। पिछले 52 व 57 के विजेता चौ० यासीन ने अपनी राजनीतिक विरासत युवराज तैयब हुसन को हस्तारिन्त कर उनका राज्याभिषेक कर दिया।

1962 के चुनाव में फिरोजपुर झिरका क्षेत्र से कांग्रेस के युवराज तैयब हुसैन का कडा मुकाबला रिपब्लिकन टिकट पर चुनाव लड रहे पूर्व कांग्रेसी (नूह से) विधायक श्री अब्दुलगनी डार से था। पिछले एक दशक से मेवात से जुडे होने के कारण मेवात में अब्दुलगनी-डार ने काफी प्रभाव अर्जित कर लिया था अतः यह चुनाव कांटे की टक्कर था उस वक्त अगर जनसंघ भावुकता की गलती न करता और हमारे सुझाव पर ध्यान दिया गया होता तो तैयब साहब का सत्ता पदार्पण असम्भव था। स्थिति यह थी कि तैयब साहब को इलाके के हिन्दु वोट मिलने में सन्देह था, हिन्दु वोटों पर कांफी प्रभाव डार साहब का था अतः इस मिथक को तोडने के लिये तैयब साहब ने अपने सहयोगी मित्र बनवारी लाल गुप्ता को हिन्दु वोट समेट जाने के लिये खडा कर दिया, और जनसंघ ने भावुकता में बनवारी लाल का समर्थन कर दिया, जबकि सामयिक नीति परिप्रेक्ष्य में हमें अब्दुल गनी डार को समर्थन देना चाहिए था। परिणाम वही हुआ हिन्दु वोट टूट जाने से डार साहब हार गये। और तैयब साहब का भावी राजनीतिक मार्ग प्रशस्त हो गया।

चौ० कंवलखां आली मेव के जो 47 में पाकिस्तान जा चुके थे अपने सम्बन्धियों से मिलने 1964 में यहां आये हुए थे कि जासूसी के गम्भीर आरोप में पुलिस द्वारा बन्दी बना लिये गये। विस्तृत जांच के लिए जब उन्हें C I.A. पुलिस अपने संरक्षण में अमृतसर ले जा रही थी तो तैयब साहब ने (जो उस समय करों मंत्री मण्डल के सदस्य थे) दिल्ली धोला-कुआँ के निकट पहुंचकर तत्काल उन्हें पुलिस के कब्ज से छुडाकर सुरक्षित लाहौर भिजवा दिया गया था।

1967 में जब देश के आधे से अधिक भाग पर गैर कांग्रेस का अधिकार हो गया था तो यहां भी दोनों मेव बहुल क्षेत्रों से कांग्रेस की अर्थी उठा दी गई। परिणामतः नूह व फिरोजपुर झिरका से क्रमशः दोनों

कांग्रेसी प्रत्याशी खुर्शीद अहमद व तैयब हुसैन अपने निकटतम निर्दलीय प्रतिद्वन्द्वियों चौ० रहीमखां व दीन मौहम्द से हार गये थे। 1972 आते आते देश अस्थिरता के द्वार तक पहूंच चुका था, किन्तु उसका कोई न्याय संगत समाधान खोजने की बजाय विवेक शून्य सत्ता शीर्ष ने लोकतन्त्र के पैरों में बेडियां डालकर उसे सामंत शाही के तहखाने में डाल दिया। 25 वर्ष के गत काल खण्ड में मेव कांग्रेस के मुस्लिम स्नेह की वास्तविकता से काफी परिचित हो चुके थे। अब कांग्रेस मेवों की कांग्रेस निष्ठा के प्रति कुछ दुविधा ग्रस्त सी हो चली थी। कांग्रेस की आखें तब खुली जब 77 के लोकसभा चुनाव में 32 मु० साँसदो में कांग्रेस के मात्र 11 रह गये जबकि लोकदल के मु० साँसदो की संख्या 17 थी। 1967 में खुर्शीद को हराने वाले मेवात के स्वच्छ छवि नेता चौ० रहीम खां एक वर्ष बाद ही पुनः हुये चुनाव में उसी खुर्शीद से विधान सभा चुनाव हार गये। परन्तु 7 के चुनाव में पुनः इसी नूह क्षेत्र से खुर्शीद को पराजित कर विजयी हो गये। किन्तु यह चुनाव रद्द हो जाने व न्यायालय द्वारा रहीमखां पर 6 वर्षों तक चुनाव लडने पर प्रतिबन्ध लगा देने के कारण 74 में हुए इसी उपचुनाव में रहीमखां के भाई सरदारखां का मुकाबला उक्त खुर्शीद अहमद के पिता कबीर अहमद से हुआ। और मा० सरदार खां हार गये परन्तु 1977 में सरदारखां जीत गये और देवीलाल मन्त्री मण्डल में विद्रोह हो जाने पर 1979 में जब जनता पार्टी की भजनलाल सरकार आई तो आप हरियाणा के उप गृहमन्त्री बना दिये गए। इस कालखण्ड में आपने अपूर्व साम्प्रदायिकता का नग्न प्रदर्शन करते हुए घोर साम्प्रदायिक छवि अर्जित की आप आर्थिक दृष्टि से एक दम जमीन से उठकर आकाश में जा पहूंचे। 1980 में जब भजनलाल सारे मन्त्रिमण्डल का दल–बदल करा कर कांग्रेस में जा पहूंचे तो सरदार खां 1982 तक अपने इसी पद पर बने रहे! इस काल की अर्जित छवि ने बाद में अनेक

चुनाव लडने पर भी सरदार खां को अन्त तक पुनः हरियाणा विधान सभा के दरवाजे तक नहीं पहुंचने दिया। यहाँ तक कि 1987 के चुनाव में मात्र 8133 मत प्राप्त कर चौथे नम्बर पर रह गए ! और जमानत तक भी नहीं बचा सके !

मेवात में चौधरी यासीन खां के बाद उभरे नेतृत्व मे चौ॰ रहीम खां को छोडकर प्रायः सभी जोशीले किन्तु प्रभाव शून्य थे। 1982 में झिरका क्षेत्र से जब चौ॰ शकरुल्ला खां कॉंग्रेस टिकट पर दुबारा चुने जाने पर पुन्हाना दौरे पर आये और आपको 21–5–82 को बाजार की ओर से सम्मान रूप स्वागत में हार पहनाया गया तो आपने उसी क्षण जनता की भरी भीड क सामने उस हार को घृणा के आवेश में तोडकर फेंक दिया और यहाँ तक कहा "मुझे काफिरों के वोटों की जरूरत नही" कुछ शब्द तो आप ऐसे असभ्य बाजारू भाषा के कह गये जो लिखे नहीं जा सकते। 84 में आपने फिरोजपुर झिरका की एक सार्वजनिक सभा में खुले मंच पर एक बिजली अधिकारी को थप्पड भी मार दिया था इसका परिणाम 1987 के चुनाव में सामने आया, जब जनता दल विधायक अजमतखां से 8693 वोटो से हार गये तब आप अपनी पिछली उद्दण्डता व असभ्यता का पश्चाताप व्यक्त करते फिरे तो जनता ने इन्हें क्षमा कर 1991 मे पुनः विधान सभा में पहूंचा दिया ! परन्तु आपका व्यवहार आज तक भी वही है।

मेवात का वर्तमान साम्प्रदायिक विषाक्त वायु मण्डल अचानक ही उत्पन्न नही हो गया। यह परिणाम है उस मानसिकता का जो चिरकाल से योजनाबद्ध भारतीय जनमानस में मजहब के नाम पर सुदृढ की जाती रही है अस्तु ! इस मानसिकता क संदर्भ में सारे परिदृश्य पर एक विहंगम दृष्टि आवश्यक है।

"प्रलय प्रवाह"

1857 के भारत में सदियों पुरानी मु० सत्ता के पतन की पराजय-बोध पीड़ा भारत के विहवल मु० मानस को सदैव कचोटती रही है। बहादुरशाह जफर के पतन से आज तक मुस्लिम नेतृत्व की सारी अन्त-र्पीडा, सारी रणनीति, राजनैतिक व धार्मिक परिधि में हुये सभी संघर्ष व आन्दोलन, सन्धि- विग्रह की सभी प्रक्रियाएं मात्र औरंगजेबी सत्ता के पुनर्स्थापन के ध्रुव लक्ष्य पर केन्द्रित रही है। इस संदर्भ में "राष्ट्रवादी" जमीअत उलेमा के चिन्तन-दर्शन पर एक दृष्टि :-

"दीन की सभी प्रक्रियाएं तभी पूरी हो सकती हैं जब राज्य सत्ता खुदा परस्तों (मुसलमानों) के हाथ में हो (जमीयत उलेमा का इतिहास-भाग १ पृ० ४८) हमारा सदा यही लक्ष्य रहा है कि भारत में इस्लाम का पूरा संविधान लागू हो। (पृ० ३०) इसके लिये अगर दूसरो कौम (व हयदेश) से भी सहयोग लिया जाए तो वह 'फर्ज' है। (पृ० ६१) कांग्रेस से सहयोग व अंग्रेजो का विरोध केवल इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए है (४६) इस सच्चाई को ध्यान में रखें कि यह देश अंगेजों ने मुसलमानों से छीना है अतः इसे आजाद कराना हमारा फर्ज है। (भाग २ पृ० १२८) गैर मुस्लिम को मुसलमान बन जाने पर ही भाई समझा जा सकता है। (भाग २ पृ० १२)। तथा अप्रैल 49 में देश में शरई अदालतें बनाये जाने की मांग की (जमीयत उलेमा पृ० १६)। हिन्दी को राजभाषा घोषित किये जाने पर मौ० अब्बुल कलाम आजाद इतने क्षुब्ध हुए कि विरोध स्वरूप आपने 'भाषा समिति' से ही त्याग पत्र दे दिया (पृ० २७)। उलेमा का मानना था कि उर्दू मुसलमानों की पृथक राष्ट्रीय पहचान का मुखर चिन्ह है (पृ० २४)। मौलाना अकबराबादी के अनुसार उलेमा को यह सम्भावना नही थो कि आजाद भारत की बागडोर हिन्दुओं के हाथो में

होगी (पृ० १२)। काश्मीर के भारत में विलय पर मौ० हिफ्जुर्रहमान का कहना था कि "इससे मु० बहुल प्रान्त अस्तितत्व में आता है" और मुसलमान इस उद्देश्य के लिये सर्वस्व बलिदान करने को तैयार है (पृ० १४ तभी तो उत्तर प्रदेश के तत्कालीन कांगेस अध्यक्ष ने कहा था, कि **"जमीयत के नेता साम्प्रदायिक हैं और भाषा व संस्कृति के नाम पर मुसलमानों को साम्प्रदायिक रेखा पर संगठित कर रहे हैं" (जमीयत पृष्ट १५) इत्यादि।**

प्रश्न यह है कि देश में मुसलमानों के अतिरिक्त पारसी यहूदी, इसाई आदि अनेक अल्पसंख्यक समुदाय हैं। इसाई–यहूदी–मुसलमान तीनों के तौरेत-जबूर-बाइबिल आदि मान्य धर्मग्रन्थ एक हैं। गाय को तीनों में कोई भी माता नही मानता सभी के यहां गौ मां समक्षण जायज है। मस्जिद गिरजे आदि सभी के आस्था केन्द्र धर्मस्थल हैं। दाऊद, इब्राहिम, याकूब मूसा, ईसा, आदि पैगम्बर – महापुरुष एक हैं, सभी की सांस्कृतिक परम्पराएें समान हैं, एक ही क्षेत्र से उत्पन्न है। सभी का इतिहास एक फिर क्या कारण है कि मुसलमानों के अतिरिक्त इसाई यहूदी आदि की न गौवध की समस्या सुनने में आई, न इनके किसी धर्मस्थल से जलूसों पर हमलों की घटनाऐं हुई, न कभी पूजास्थलों के सामने से निकलने वाले सार्वजनिक जलूसों के निर्धारित रास्ते आये दिन बदलते रहने की स्थिति पैदा हुई, न किसी ने पर्सनल लॉ की मांग की। यह विडम्बना केवल मुसलमानों की ही क्यों ? जो कहीं गौ के नाम पर, कहीं जलूसों के रास्ते के नाम पर, कहीं किसी अखबार के नाम पर तो कहीं किसी किताब के नाम पर कभी किसी बाल के नाम पर तो कभी पर्सनल लॉ के आवरण में आये दिन विस्फोटित होती रहती है। इसाई देशों में गैर इसाई स्वतन्त्र राष्ट्रीय सत्ता में समान सहभागी फिर मुस्लिम देशों में गैर मुस्लिमों का बन्धक जीवन क्यों ?

इसका मूल कारण वह मान्यता है जिसके अन्तर्गत गैर मुस्लिमों को काफिर समझा जाता हो, स्वयं को शासक मानकर दूसरों को "प्रजा" माना जाता हो, देश को मातृभूमि नहीं दार-उल-हरब (युद्ध क्षेत्र) कहा जाता हो, गैरमुस्लिम से मित्रता का निषेध हो, यदि हालात की मजबूरी में गैरमुस्लिम से मित्रता जरूरी हो जाए तो केवल ऊपरी तौर पर मित्रता का शरई प्रावधान हो। यही वह 'विश्वास' है जिसके कारण वन्देमातरम में दुर्गन्ध आती है, भारत भूमि को माता नहीं "डायिन" कहा जाता है अपने लिए स्पेशल कानून बनवाये जाते हैं। राष्ट्रीय प्रतीकों के उपहास उडाये जाते हैं। गौहत्या 'धर्म' कहाती है!

जो वर्ग देश के गृहमंत्री, विदेशमंत्री, सर्वोच्च न्यायाधीश, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति तक के सर्वोच्च पद प्राप्त करके भी सन्तुष्ट न हो, जिसे राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान तक का 'अधिकार' प्राप्त हो, जिसकी आंखों में सदैव चार सौ वर्ष पुराने सत्ता स्वप्न तैरते हों, उसे राजनीतिक रिश्वतों से "राष्ट्र भक्त" बनाने के स्वप्न कब तक देखे जाते रहेंगे? इसी सैद्धान्तिक धरातल पर रचे गये इतिहास पृष्टों की हलकी सी झलक निम्न है।

१. मोपला विद्रोह काल में मुस्लिम नेता अली मुसलयार ने राष्ट्रीय एकता को पारिभाषित करके कहा था हिन्दु मुसलमानों की स्थायी एकता का यही मार्ग है कि सारे हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया जाय। जो हिन्दु मुसलमान बनने से इंकार करते हैं वे हिन्दु-मुस्लिम एकता के शत्रु हैं, देशद्रोही व कतल करने के योग्य हैं। (कांग्रेस लीग व महासभा पृ० २८ विजय कुमार पुजारी)

२. १९२६ में सर अब्दुर्रहीम ने (आप शायद बंगाल हाईकोर्ट के जज भी रहे हैं) कहा था। "यदि इस देश से अंग्रेज चले

जाएं तो भारतीय मुसलमान यह पसन्द करेंगे कि कोई विदेशी मुसलमान हिन्दुस्तान पर राज्य करे।"

३. १६२५ में डा० सैफुद्दीन Safuddin कि चलू ने लाहौर में कहा था। "हिन्दुओ! अगर आप हमारी तन्जीम में रोडे अटकाते हो .. ... तो हम अफगानिस्तान या अन्य किसी शक्ति को साथ मिलाकर यहां अपना शासन कायम कर लेंगे।

४. दूसरे दशक में तुर्की व काबुल की सहायता से भारत में इस्लामी सत्ता के पुनर्स्थापन के ऐतिहासिक भयंकर षड़-यंत्र की रूपरेखा निम्न है।

नकशये जो इस तरह मुरत्तिब (तैयार) किया गया। कि काबुल को हैडक्वार्टर बनाया जाय, काबुल से पंजाब तक पूरे इलाके में पठानों की आबादी में जोशे जिहाद (मजहबी उन्माद) पैदा करके इनको हर तरह मुसल्लह (सशस्त्र) किया जाए। मौलाना अबीदुल्लाह सिन्धी हुकूमते अफगानिस्तान को फौजी मदद पर आमादा करें। शेख-उल-हिन्द महमूदुल हसन तुर्की हुकूमत व अफगानिस्तान की फौजी मदद लेकर इस सरहदी इलाके से हिन्दुस्तान में दाखिल हों। जिस दिन बाहर से आने वाली फौज हिन्दुस्तान में दाखिल हो ठीक उसी ता० में पूरे सरहदी इलाके पंजाब व पश्चिमी उत्तरप्रदेश में सशस्त्र विद्रोह कर दिया जाय ... सारा प्रोग्राम तैयार हो चुका था। शेख-उल-हिन्द मदीने पहूंचकर तुर्की के युद्धमंत्री से मुलाकात करके इसका फरमान हासिल कर चुके थे। फरमान की कापी हिन्दुस्तान आ गई, लेकिन कुदरत का फैसला कुछ और था। एक आस्तीन के सांप ने सारा प्लान चौपट कर

दिया और शेखुलइस्लाम मौलाना हुसन अहमद मदनी, और मो० अजीज गुल, हकीम नुसरत हुसैन, मौलाना अब्दुल वहीद मक्के में गिरफतार करके मालटा जेल भेज दिए गये।

(आजादी की लडाई में उलेमा का रोल पृ० ७-८ उर्दू)

५. मौलाना अबुल कलाम आजाद !

इसी काल खण्ड में जब मौलाना अबुल कलाम आजाद अमीर काबुल को भारत पर आक्रमण का निमन्त्रण देने को काबुल जाते हुये रास्ते में लाहौर रुके तो "बरगंजा" होटल में अनायास ही भाई परमानन्द जी से मुलाकात हो गई। जब यात्रा की स्पष्ट चर्चा हुई तो भाई जी सुनकर स्तब्ध रह गए और बोले। इससे क्या होगा ? भारत तो फिर भी गुलाम ही रहेगा, अब अंग्रेजो का है तब अफगानों का रहेगा। मौलाना बौखला कर बोले, यहां शासन हिन्दु का होता है या मुसलमान का "इससे" क्या अन्तर पडेगा ? विदेशी तो अंग्रेज ही तो है और वह यहां से निकाला जा चुका ही होगा। भाई जी फौरन बोल उठे कि अगर "इस से" कोई फर्क नही पडता तो फिर आक्रमण का निमन्त्रण काबुल को ही क्यों दिया जाय, Why not to King of Nepal अर्थात नेपाल नरेश को क्यों नही ? इतना सुनते ही मौलाना की हवा खिसक गई और काबुल न जाकर दूसरे ही दिन वापिस बैरंग दिल्ली लौट आये।

ये वे ही मौलाना अबुल कलाम आजद थे जिन्होने दिसम्बर १९२७ कलकत्ता में मु० लीग के सम्मेलन को अध्यक्ष पद से सम्बोधित करते हुये मुसलमानों को अधिक से अधिक मुस्लिम प्रान्तों के गठन की न केवल आवश्यकता ही बताई बलिक इसे मुसलमानों के 'जीवन-मृत्यु' का प्रश्न बताया था। मुस्लिम बहुल प्रान्तो में हिन्दुओं के "बन्धक स्वरूप" का भी उल्लेख किया था। बम्बई से सिंध, पंजाब से सीमा प्रान्त काटकर अलग प्रान्त बनाये जाने इसी उद्देश्य की कडी थी। आज तक भी मल्लापुरम जैसे

प्रान्तों का गठन जारी है। अभी तक 'पाकिस्तान' के नाम का सूत्र पात तक भी नही हुआ था।

(कांग्रेस की मु० पोषक नीति पृ० ६०)

६. **ऐसे ही १९६९ में रबात मुस्लिम सम्मेलन के संदर्भ में घटित राष्ट्रीय कलंक घटना की चर्चा पूर्व पृष्टों में की चुकी है**

७. **१९९० में उ0 प्रदेश के साम्प्रदायिक दंगो के सम्बन्ध में अब्दुल्ला बुखारी ने संयुक्त राष्ट्र संघ को पत्र भेज कर भारत में शान्ति सेना भेजने की अपील की थी, १४ दिसम्बर को जुमा के खुतबे में यह अपील दुहरायी गई थी।**

८. २९-१-९० को ईरान में हुए ६० मुस्लिम देशों के सम्मेलन में ईरान सरकार ने तत्कालीन 'विदेश मंत्री' इन्द्रकुमार गुजराल को शामिल होने की अनुमति नही दी तो केन्द्र की वी. पी. सरकार ने अ० बुखारी को विदेश मंत्री के रूप में ईरान भेज दिया। जहां आपने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में ६० देशों के २०० प्रतिनिधियों के सामने भारत में मुसलमानों पर हो रहे कथित अत्याचारों का 'मार्मिक' चित्रण करते हुए काश्मीर से जगमोहन (गवर्नर) को तत्काल वापिस बुलाये जाने की माँग की।

९. **आज भी सैयद शहाबुद्दीन अपनी पत्रिका इण्डियन मुस्लिम नही "मुस्लिम इण्डिया" के नाम से ही निकाल रहे हैं।**

१०. ६-१२-९२ की अयोध्या घटना को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने मे कौन सी कसर छोडी गयी थी ? इत्यादि इस "मुल्लाई" चरित्र के प्रति ८-९-६३ को जवाहर लाल जी नेहरू ने कहा था ! इन उलेमाओं के परों तले की खाक मेरी आँखों के लिए सुरमा का मानिन्द है। इनकी कदम बोसी मेरे लिये गर्व का प्रतीक है। (उलेमा का इम्तियाजी रोल पृ० २६) दूसरी ओर सर्वोच्च न्यायालय के भूत पूर्व न्यायधीश श्री

मेहरचन्द जी महाजन की शीर्षस्थ मौलाना अबुल कलाम आजाद पर यह टिप्पणी थी :-

"मौलाना जिन्ना से भी ज्यादा धूर्त थे, यदि उन पर छोड़ दिया जाता तो वस्तुतः भारत इस्लामी वर्चस्व का देश होता" (विचार नवनीत-पृ० १७४) ।

२८ जुलाई ६३ को लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर भ्रष्टाचार व अनैतिकता के सहारे जैसे तेसे सत्ता बचाकर 'विजयोल्लास' मनाने से ज्यादा धृष्टता और क्या होगी ? जिन सात जद सांसदो की पार्टी घाती "संजीवनी" ने राव सत्ता को प्राण-दान दिया उन्हें पांच दिन बाद ही विधिबत कांग्रेस में ले लिया गया। प्राण दान के बदले दिए जाने वाले अगले पुरस्कार की प्रतीक्षा है। देश को रक्त-मांस विहीन कर उसकी हड्डियां नचोडने बाले, घर घर से भीख इकटठी कर "कुवेर" बनने वाले, राष्ट्र की गरिमा व अस्मिता के मूल्य पर सुरा सुन्दरी के जश्न मनाने वाले। बोफोर्स व हर्षद संस्कृति जिनका मूल, तुष्टिकरण जिनका जीवन प्राण है। अनिर्णय ब्रत जिनकी निष्ठा सत्ता सिंहासन जिनका ईमान है :-

मानबता की चिता भस्म ले स्वर्णिम साज सजाने वाले
जीवन-मूल्यों की समाधि पर विजय पताका फहराने वाले

आज गांधी भक्तों द्वारा "राम भरत चरित्र" प्रस्तुति करण में हो रहा। सत्ता-शव पर गिध्द-युद्ध नया नहीं। कृष्ण की छाती पर तना अर्जुन का गांडीव 'पैतृक चरित्र" का प्रस्फोट मात्र है। जहां युग पुरुष लोकमान्य तिलक, श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा सर फिरोजशाह मेहता जैसों को भरे अधिवेशन में मंच पर जूता मारा जा सकता है, वहां बेचारे आधुनिक नेता किस खेत की मूली हैं (घटना :- 'सूरत अधिवेशन' २८-१२ १६०७ कां० इतिहास पट्टाभी पृ० २३) आज वही :-

फूट चली है मर्मवेदना करूणा विकल कहानी सी ।
"सूट केस" संस्कृतिक्र हंस रही जानी सी पहचानी सी ।।

आज सैक्यूलर मेघनाद की छद्‌म धर्म निरपेक्षता रूपी शक्ति से आहत लक्ष्मण की रक्षा के लिये संजीवनी लाने को कृतसंकल्प हिन्दु चेतना रुपी हनुमान का मार्ग रोकने को सत्ता शीर्ष काल ने मि "चन्द्रा स्वामी यज्ञ" द्वारा हिन्दुओं का विश्वास छलने को अपनी "बगंला भक्ति" प्रकट कर वार-बार आखें खोलने मूंदने का अभिनय करता सारे घटनाक्रम को :-

सत्ता के उतुंग शिखर पर बैठ दम्भ की शीतल छांह ।
काल नेमि स्तमित नयनों से देख रहा है प्रलय प्रवाह ।।

जब देशव्यापी राजनीतिक चक्रवात का यह रूप हैं तो भला मेवात क्षेत्र कैसे इसके प्रभाव सें मुक्त रह सकता है। हम कुपोत वृति से चाहे कुछ भी समझते रहें ।

।। अयोध्या, इराक और मेवात ।।

१९८२ के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर श्री राम जन्म भूमि का प्रश्न मुखर होने लगा था। सारे देश में सम्मेलन, प्रदर्शन व यात्राओं का क्रम चल पडा था। इस राष्ट्रीय गरिमा, निष्ठा व अस्मिता के प्रश्न पर चूंकि मेवात के हिन्दु की भी सहानुभूति व आत्मिक लगाव होना स्वाभाविक था इस प्रश्न के साथ मेवात या किसी भी अन्य स्थान के भी हिन्दु की आत्म निष्ठा समान रूप से सम्बद्ध थी । किन्तु मेवात के हिन्दु की इस सहानुभूति प्रदर्शन को मेव समाज अपने लिए धार्मिक चुनौती के रूप में स्वीकार कर मेवात के हिन्दुओं को गहरे सन्देह व घृणा की दृष्टि से देख रहा था। मेवों का कहना था कि यहाँ से कई सौ मील दूर अयोध्या के आन्दोलन को मेवात में कतई कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए :- परन्तु हम देखते हैं कि ईराक पर हुये उस संयुक्त राष्ट्रीय अमेरिकी आक्रमण के विरोध में जिसमें इस्लामी विश्व के सर्वोच्च शिखर सऊदी अरब तथा

सबसे बड शक्तिशाली इस्लामी देशों मिश्र व तुर्की की ईराक विध्वंस में पृष्टभूमि सर्वाधिक सक्रिय था। ईराक से हजारों मोल दूर मेवात में गाँव गाँव व गली गली में सद्दाम की सहानुभूति में जलसौं प्रदर्शनों की आंधी चल पडी अनगनित चौराहों पर बुश क पुतले जलाये गये। नवजात–शिशुओं के नाम "सद्दाम हुसैन" रखने को होड चल पडी, सद्दाम के चित्रों को बाढ उमड पडी। जबकि इस संघर्ष में कट्टर इस्लामी देश पाकिस्तान की दस हजार सैना इराकियों की लाशों से बगदाद और नजफ की पवित्र भूमि को पाट रही थी, दुजला फरात के पानी को ईराकियों क खून से लाल कर रही थी, और फिर इस संघर्ष का कारण भी ईराक द्वारा एक नन्हें मासूम देश कुवैत का निगल जाना ही था।

अस्तु! मुस्लिम जगत में आन्तरिक धार्मिक सह अस्तित्व की स्थिति तो ईरान-ईराक-कुवैत-तुर्की-सीरिया-सऊदी अरब के पारस्परिक सम्बन्ध मिश्र-चाड-लीबिया-सुडान आदि की सहधर्मी एक रूपता, अफगानिस्तान के अन्तर्ज्वालामुखी, सोमालिया-बोस्निया आदि में निर्मम मुस्लिम संहार की संकट बेला में उनकी इस्लामी जगत द्वारा सहायता – सुरक्षा की सक्रियता से ही स्पष्ट है।

सारांश यह है कि मेवात में हजारों मील दूर तुर्की की उस खिलाफत का आम्दोलन चलाया जा सकता है जिसे सिवाय भारत के दुनियां के किसी भी इस्लामो देश का समर्थन प्राप्त नहीं था। और जो तुर्की का खालिस अन्दरूनी राजनैतिक मामला था। (1920–22) फलस्तीनी संघर्ष होता है अरब भूमि पर और "फलस्तीन रक्षा समिति" बनाई जाती है भारत में। हजारों मील दूर ईराक क समंथन में मेवात को तो दूसरे ईराक का रूप दिया जा सकता है किन्तु मेवात में रहने वाले हिन्दु का यह अधिकार स्वीकार नहीं किया जा सकता कि वह अपने इष्ट देव राष्ट्रीय आस्था पुरुष भगवान राम के साथ स्वयं को जोड सके।

कोई भी स्वाभिमानी जीवित समाज जातीय अपमान को कुसमय आ जाने पर सहन तो कर लेता है। किन्तु उसे 'स्वीकार' कभी नही करता, भुला भी नहीं सकता। उपयुक्त अवसर आ जाने पर उस कंलक का परिष्कार भी अवश्य करता है। हम देखते है कि हजारों साल के सतत संघर्ष के बाद इस्रायल अपने आस्था-प्रतीक योरोशलम बैत-उल-मुकद्दस को प्राप्त करके ही चैन की सांस लेता है। स्वयं भारत ने भी स्व० राष्ट्र-पति डा० राजेन्दप्रसाद जी के शब्दों में सोमनाथ का पुनरुद्धार कर "१२ सौ वर्षों के कंलक को धोया है" तो फिर वही भारत क्या काशी, मथुरा, अयोध्या के ३-४ सौवर्षीय राष्ट्रीय कंलक के काले टीकों को कुंकुम तिलक मानकर प्रलय तक माथे पर चिपकाये रखे ? क्या दुनियां में कोई देश है जो अत्याचारी आकान्ताओं को 'महान' बताकर उन्हें राष्ट्र-पुरुष के रूप में प्रचारित करता हो ? यह भारत है जहां सिकन्दर भी महान, अकबर भी महान और न जाने कौन कौन महान बना दिये गये हैं। प्रश्न यह है कि जब आये दिन हिन्दु कन्याओं के जबरदस्ती डोले लेने वाला नौजवान सुन्दर लडकियों की प्रदर्शनी मीना बाजार लगवाने वाला अकबर महान है तो तल तिल कर जीवन गलाने वाले प्रताप कैसे है ? जब सिकन्दर "महान" है तो चाणक्य व चन्द्रगुप्त कैसे हैं, आज तो टीपू सुल्तान जैसे को भी "महान" बना दिय गया है। आज राष्ट्र के कंलक चिन्हों को राष्ट्रीय 'प्रतीक' बताया जा रहा है।

आज काशी, मथुरा, अयोध्या के गरिमा मय आन्दोलनों से राष्ट्र के टूट जाने का हौवा खड़ा करने वाले क्या बताएंगे कि १९४७ में कौन से काशी-मथुरा या अयोध्या विवाद थे जब देश टुकड़ टुकड़े कर दिया। अपूर्व ताण्डव व लाखों का नर-संहार हुआ। यह सब अपनी स्वार्थ परक नपुसंकता व आत्म हीनता को छिपाने का लज्जास्पद दुष्प्रयास है। बिल्ली को

देखकर आंखें बन्द करने का यही आत्मघाती कपोत चिन्तन एक सदी से बराबर दोहराया जाता रहा है। इसीका परिणाम यह आज का अभिशप्त व तिरकृत भारत है।

स्मरण रहे जातीय गरिमा व स्वाभिमान की रक्षा के लिए समझौते नही संघर्ष हुआ करते हैं, संधियां नही बलिदान होते हैं, यह प्रश्न कुर्सियों के गणित से या मानसिंह–जयसिंह वाद से नहीं बन्दा वैरागी, गुरुगोबिन्द सिंह व शिवाजी के तपस्तेज से हल होते है। आज पंचशील नही पंचतंत्र चाहिए, छद्‌म धर्म निरपेक्षता नहीं पंथ निरपेक्ष "धर्म सत्ता" चाहिये, आज कर्ण पौरुष हीन नही है, इसे तो सारथी 'शल्य' चिन्तन शून्य बना रहा है। आज आवश्यकता है कर्ण को "शल्य मुक्त" बनाने की। आज युधिष्टिर नही कृष्ण चाहिये, चैम्बर लैन नही र्चचिल चाहिए, आम्भी नही चाणक्य चाहिये। इमाम बुखारी या जिन्ना नही वीर हसन खां मेवाती चाहिये।

मेवात के इतिहास क्षितिज के जगमगाते नक्षत्र वीर हसनखां मेवाती के नाम का राजनीतिक उपयोग की दृष्टि से जब तब भले ही नाम मनाई पडता हो। किन्तु श्रद्धा भावना की दृष्टि से उसे कभी याद करने का कष्ट नहीं किया जाता। उल्टा उनके हत्यारे बाबर को आदर्श प्रतीक रूप में निरूपित किया जाता है स्मरण रहे राष्ट्र भक्त वीर हसन खां मेवाती ने राणा सांगा के कन्धे से कन्धा मिलाकर भारतीय गरिमा का रक्षा के लिये (१६–३–१५२८) को फतेहपुर सीकरी के युद्ध क्षेत्र में अपने बारह हजार बलिदानी वीर मेव सैनिकों के साथ बीरगति पाई थी। आज उनका रक्त – वंश बन्धु मेव समाज अपने अग्रज इस वीर पुरुष के ऐतिहासिक बलिदान का क्या मूल्यकांन कर रहा है? इसके नाम के मेवात में कितने स्मारक हैं। कहां और कब इसकी यादगार मनाई जाती है? बाबर ने इसी वीर हसनखां की मृत्यु पर कहा था :–

अल हम्दोलिल्लाह कि ओ काफिरे आजम हिन्दोस्तान व चाहे जहन्नुम रसेद। (तुजके बाबरी) अर्थात :- खुदा का शुक्र है कि वह बडा काफिर जहन्नुम में गया। यही था वह बाबर जिसने प्रसिद्ध मेवाती वीर इलियासखां की जिन्दे की खाल उतरवायी थी, (ता० मेव क्षत्री पृ० ३४७) अतीत के जिस मुस्लिम शासन काल में मेवों पर भीषण अत्याचार ढाये गये, लडकियों के अपहरण तथा :–

चांदो का एक टंका (सिक्का) मेव का सर लाने वाले को और दो टंका जिन्दा मेव पकडने वाले को ईनाम घोषित किया गया ………… २५० मेव कैदियों में से कुछ का हाथियों के पैरों से कुचलवाया गया। कुछ क टुकडे टुकडे कर दिये गये। सौ से ज्यादा की शहर के भंगियौं द्वारा जिन्दों की खालें खिचवाई गई। (ता० मेव क्षत्री ३३३)

आश्चर्य है कि मजहब के अन्धे जोश में इस सभी कुछ को भुलाकर उन्हीं अत्याचारी शाषकों को अपना आदर्श श्रद्धा प्रतीक मानकर उस लज्जास्पद काल खण्ड को स्वर्ण युग के रूप में महिमा मण्डित किया जा रहा है।

महा कवि रहीम का जन्म भी मेव कन्या के गर्भ से ही हुआ था। ता० मेव क्षत्री में इनका वंश परिचय इस प्रकार है।

"जमाल खां हसनखां मेवाती का चचाजाद भाई था जिसकी दो लड़कियां थी। जिनमें एक बादशाह अकबर व दूसरी बैरम खां को ब्याही थी। बैरम खां के घर इसी लडकी के गर्भ से खानखाना अब्दुर्रहीम का जन्म हुआ था"। (ता0 मेव क्षत्री) (पृ0 १५५, ३५२, ५३२)

आज मेवात में साहित्य प्रतिभा सम्मान के क्षेत्र में डा० इकबाल, जोश मलीहाबादी, हफीज जालन्धरी के चर्चे तो सुनने में आते हैं परन्त रहीम को कितना हार्दिक व भावात्मक सम्मान दिया जाता है आज देश

का हिन्दु समाज तो हरिद्वार के 'भारत माता मन्दिर' में शहीद अशफाकुल्ला खां की मूर्ति स्थापित कर उस पर श्रद्धा सुमन चढा सकता है। रहीम व रसखान की प्रतिमा अपने हृदय मन्दिर में स्थापित कर सकता है, वीर हसनखां मेवाती को अमर शहीद का सम्मान प्रदान कर सकता है किन्तु उनका धर्म बन्धु, रक्त बन्धु, वंश बन्धु मेव समाज हसनखां नहीं उसके हत्यारे बाबर को अपना हीरो स्वीकार करने में ही गर्वानुभूति कर रहा है।

।। मेवात का मंत्री राज्य ।।

दुर्भाग्य से पिछले काफी समय से हर सरकार अपनी 'सत्ता' सुरक्षित रखने को मेवात के मंत्रियों को तुगलकशाही अधिकार देकर उन्हें "सब–कुछ" करने की छूट देती रही है। प्रशासन जन व्यवस्था का नहीं मंत्रियों के स्वार्थ पूरे करने का साधन मात्र बनकर रह गया है। आज मेवात में संविधान वही है जो मंत्री जी का आदेश है। न्याय वही है जो मंत्रीजी की इच्छा पूरी करता हो। प्रशासनिक कर्मचारी की कर्तव्य निष्ठा मंत्री जी के भले बुरे सभी आदेश आँखे बन्द करके पालना है, मेवात के चर्चित रहे मंत्री शकरुल्ला खां ने अपने मंत्रीत्व काल में ही बिजली विभाग के एक अधिकारी को फिरोजपुर झिरका की एक आम सभा में मंच पर थप्पड मारा था। गत अगस्त १९९२ में मेवात के दूसरे मंत्री इलियास खां ने पुनहाना के विश्राम गृह पर स्थानीय नगर पालिका सचिव श्री राठी को भरी सभा में सारे सरकारी स्टाफ के सामने इसलिये थप्पड मारा था कि यह सचिव मंत्री जी द्वारा नगरपालिका की कई लाख रुपये मूल्य की भूमि पर अपने रिश्तेदारों का (जिनमें उत्तर प्रदेश के भी थे) जबरन कब्जा कराने का विरोध कर रहे थे। इनहीं मंत्री इलियास खा ने १६–३–९३ को नूह में लोकनिर्माण विभाग के अभियन्ता श्री टी. ऐल. अनेजा को रेस्ट हाउस पर बुलाकर इसलिये जूता मारा कि वे मंत्री जी के कृपा पात्र शेर मौहम्मद (कार्यालय में डेलीबेस पर टाईपिस्ट) को १५-

दिन के काम के बदले १ महीने का वेतन देन को सहमत नही थे। इनहीं मंत्री जी इलियास ने सितम्बर ६२ में पुनहाना के तत्कालीन S. H. O. श्री जीत राम को उनकी 'इच्छा' पूरी न कर पाने पर खुली सडक पर जनता के सामने अपमानित कर चेतावनी देकर कहा था तेरी फीत फिकवा दूंगा, थाने को अभी आग लगा दूंगा।

मेवात के ही पूर्व मंत्री अजमतखां के मंत्रीत्व काल में उनके 'इश्शर' नामक सुपुत्र महोदय ने भी फिरोजपुर झिरका के S-D.M. महोदय श्री 'किथान' के साथ अभद्र व्यवहार किया था जो मामला पुलिस तक भा पहुंचा था।

मंत्रियों कै इस निरंकुश, उद्दण्ड व्यवहार तथा शासन की वोट तृष्णा जन्य कपोत वृति का मेवात के पीडित-आतंकित अल्पसंख्यक समाज पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव हो सकता है? और इस "प्रभाव" की क्या परिणति सम्भावित है? यह कोई रहस्य-सूत्र या शोध का विषय नहीं है यह स्पष्ट सुविदित है। गत वर्ष २१ अप्रैल १९९२ को पुन्हाना विश्राम गृह पर पूर्व चर्चित मंत्री शकरुल्ला खां ने खुले मंच पर राष्ट्र ध्वज को "कपडे की कतरन" कह कर अपमानित किया था। कस्बे के हिन्दुओं को चेतावनी देकर कहा कि – यदि मेव तुम्हारा कर्जा वापिस न लौटायें, बाजार का ही बहिष्कार कर दें तो तुम क्या कर लोगे? कस्बे के हिन्दुओं को 'सबक' सिखाने को आपने मेवों से "लाठियों को तेल लगा लेने" का भी आहवान कियाथा। यह सारा घटनाक्रम विस्तार से महीनों तक सारे उत्तर भारत के प्रेस में बहुचर्चित विषय बना रहा, किन्तु शासन के पास इस सब पर सोचने या विचार करने को समय ही कहा है। उन्हें मेवों के वोट चाहिएं आगे कुछ भी होता रहे उसकी बला से।

अत: पिछले लम्बे समय से मेवात में योजना बद्ध सुलगाया जाता रहा साम्प्रदायिक उन्माद का यह लावा ७ दिसम्बर १९९२ के अयोध्या काण्ड की आड में एक क्षण भर में सारी मेवात में सैंकडों वर्ग कि० मी०

की परिधि में ठीक एक ही समय फूट पडा । ७ दिसम्बर प्रातः काल ही मेवात में अनेक स्थानों पर हजारों लोंगों की सशस्त्र भीड पाकिस्तान जिन्दाबाद, हिन्दुस्तान मुर्दाबाद और अल्लाहो अकबर के नारे गुंजाती हुई हिन्दु धर्म स्थलों व कई निजी संस्थानों पर टूट पडी । मेवात के पुन्हाना, पिनगवाँ, नगीना, भादस, मांडीखेडा, नूह आदि में कई दर्जन मन्दिर देखते – देखते तोडे व जलाकर मलवे के ढेर में बदल दिए गये । करोडों की निजी सम्पत्ति लूटी व जलायी गयी, सदियों पुराने अलभ्य ग्रन्थों व पाण्डुलिपियों के विशाल भण्डार राख के ढेर बना दिये गये । उजीना के ठाकुर किशनपाल सिंह व ग्राम पल्ला के कुन्दनसिंह का पहले अपहरण बाद में हत्या कर दी गई । अनेक ने मन्दिरों के पुजारियों पर घातक हमले किये गये । नूह में गौशाला को आग लगा दी गई, गायों का अपहरण कर लिया गया, सडक पर खडी करके गाय जिबह की गई, जिन्दा गाय के गले में टायर डालकर उसमें आग लगाकर तडपा तडपाकर गाय जलाई गई । मन्दिरों की मूर्तियों को तोडकर उन पर मल मूत्र डाला गया । उजीना, नूह, पिनगवा, का आर्थिक बहिष्कार किया गया जो छः महीने बीत जाने पर भी नूह कस्वे के हिन्दुओं का आर्थिक बहिष्कार पूर्ववत चल रहा है । सात दिसम्बर १९९२ को जब मेवात में यह वीभत्स ताण्डव गजनवी व औरगंजेबी युग का दृश्य प्रस्तुत कर रहा था तो मेवात के "जन प्रतिनिधि" मंत्री कस्बे की वाटरस्पलाई लाइन कटवा रहे थे । कस्बे के हिन्दुओं को दूध स्पलाई करने वाले पर ५५२/– बिरादरी दण्ड की घोषणाऐं करा रहे थे । १९–३–९३ को नूह में मस्जिदों के लाउड स्पीकरों से घोषणा की जा रही थी कि हिन्दुओं से लैना - दैना करने वालों पर अब तक जा ५५२/- जुर्माने का प्रावधान था अब यह दण्ड राशि बढाकर ११५२/– कर दी गई है । विचारणीय बात यह है कि इस सारे काण्ड के मुख्य हीरो अपराधियों को हाथ भी नहीं

लगाया गया, क्योंकि ये लोग मन्त्रियों के सम्बन्धी, रिश्तेदार या विशेष कृपा पात्र थे। जब दर्जनों उच्च अदालतों से बिला जमानती वारण्ट जारी होते हुए भी अब्दुल्ला बुखारी की ओर आँख उठाकर भी देखने का साहस सरकार नहीं कर पाती तो फिर मेवाती "बुखारियों" पर ही हाथ डालना कोई सहज कार्य नही था। आखिर वह भी तो सत्ता के वोट बैंक हैं, कुरसी के सुरक्षा कवच है। हरियाणा के मुख्यमंत्री ३० दिसम्बर ९२ को मेवात का दौरा करके सारी ध्वंस लीला अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख गये। इतना सभी कुछ हो जाने पर भी मेवात के मंत्री इलियास खा २२–१२–९२ को हरियाणा विधान सभा में कहते हैं कि – "अगर मेवात में एक भी मन्दिर टूटा हो तो मैं त्याग पत्र दे दूंगा"। यह विषय ९-१० ११–१२ मार्च ९३ को श्री रामाविलास जी शर्मा द्वारा हरियाणा विधान सभा में तथा ११ मार्च ९३ को भाजपा सांसद श्री मदनलाल खुराना द्वारा लोकसभा में उठाया जा चुका है। इस सबका परिणाम भयंकर व अकल्पनीय भी हो सकता है। मेवात में जहां १९४७ में हिन्दु जनसंख्या का अनुपात २८, ३०% था वहां आज मात्र ८, १०% रह गया है। मेवात से हिन्दुओं का पलायन तेजी से चालू है।

प्रसिद्ध मेव नेता राजस्थान के कामा क्षेत्र से साठ के दशक में रहे विधायक) मौलवी मौहम्मद इब्राहीम की एक घटना प्रस्तुत करते साप्ताहिक 'अलजमीयत' १६-९-९३ लिखता है :-

"जब आप राजस्थान असेम्बली के सदस्य थे तो आपने एक दिन असेम्बली हॉल में रामचन्द्र जी की तस्वीर लटकी देखी। आप बोले कल हम भी यहां कुरान शरीफ और सिख भाई गुरू नानक की तस्वीरें लटकायेंगे। यह सुनते ही असेम्बली हाल से रामचन्द्र की तस्वीर हटा दी गयी"। (पृ० २)

प्रतीत होता है कि भगवान राम के चित्र को देखकर मौलाना का

सोया हुआ "बाबर" तडप उठा। यह है राष्ट्रीय अस्मिता – प्रतीक के प्रति 'राष्ट्रवादी' नेताओं की मानसिकता का मुखर रूप। साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि असेम्बली हॉल में तो 'अशोक चक्र' 'सत्य मेव जयते' और गांधी जी के चित्र भी होते हैं। तब मौलाना ने यह घोषणा क्यों नही की, कि हम 'अशोक चक्र' के साथ 'काबा' का, 'सत्यमेव जयते' के साथ 'अल्लाहो अकबर' तथा गांधी के साथ औरंगजेब के चित्र भी लटकायेंगे? आखिर गांधी को भी तो (हिन्दु होने के कारण) मौलाना मोहम्मद अली "जौहर" एक व्यभीचारी मुसलमान से निम्न बता चुके है आश्चर्य है कि उक्त संदर्भ में कुरान शरीफ के साथ 'गुरु नानक" का नाम जोडने वाले 'स्वंयभू वकील' व हमदर्द मौलाना कौन होते हैं? सिख अपनी मांगें प्रस्तुत करने को क्या स्वंय सक्षम नहीं है? क्या मु० काल के रक्तिम इतिहास, लाखों सिखों के निर्मम, वीभत्स रक्त–पात, बन्दा–बैरागी, गुरू अर्जुन देव, गुरू तेग बहादुर, व गुरू पुत्रों आदि के अमर बलिदान व १९४७ की खूनी नदियों को इतिहास कभी भुला सकेगा? "सिख भाई" आपकी 'हमदर्दी' से भलिभांति परिचित हैं।

रात दिन 'धर्मनिरपेक्षता' की दुहाई देने वाले गांधीभक्तों की दृष्टि में भगवान राम राष्ट्र के प्रतीक नहीं, केवल "हिन्दु साम्प्रदायिकता का ही 'प्रतिनिधित्व' करते हैं। क्या सैक्यूलर देश की विधानसभा राम के चित्र लगाने से "साम्प्रदायिक" नही हो जाती, फिर ऐसा करके कांग्रेस व्यर्थ में अपनी सैक्यूलर छवि को क्यों कलंकित करती फिरे, क्यों अपने वोट बैंक को नाराज करे? तभी तो मेव नेता के एक आंख के इशारे मात्र से ही अपनी गलती का सुधार करके फौरन 'राम' के चित्र को वहां से हटवा दिया गया।

विडम्बना यह है कि इतना कुछ होते हुए भी मेवनेता अपने साथ होने वाले कथित अत्याचारों का नाम लेकर कहते हैं

कि :-

हमें ४७ में पाकिस्तान जाने से गांधीजी ने रोका था। हम यहां गांधी की अमानत हैं। हम आज तक गांधी जी के आदर्शों पर चलते आ रहे हैं। अब हमारे साथ जुल्म व अन्याय हो रहा है। हम अपनी पीडा गांधी जी की आत्मा को सुनाने को निकट भविष्य में राजघाट पर धरना देंगे (१६ अगस्त ९३ को) इसमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि स्थानों क मेव भी हमारे साथ होगें। अब मेवों को सरकार व प्रशासन पर कोई भरोसा नहीं है। इत्यादि

यह निर्णय ७ अप्रैल व ५ जौलाई ९३ को नूह में सम्पन्न हुई पंचायतो में घोषित किये गये। (पंजाब केसरी १८-४-९३, जागरण १४ अप्रैल व ६ जौलाई ९३। नवभारत टाइम्स १९ अप्रैल व ६ जौलाई ९३) ऐसा ही जब मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री थे तो ऐसी ही शिकायत लेकर अहमदाबाद व अलीगढ़ के दो मुस्लिम प्रतिनिधि मण्डल श्री देसाई से मिले थे, और उनको पेश किए गये ज्ञापन में लिखा था कि :-

"अब ऐसा लगता है कि भारत में मुसलमानों क लिये कोई स्थान नहीं है मुसलमानों की पहचान के लिये गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है"। मोरारजी पहले तो चुप रहे फिर बोले :-

"यदि आप लोगों का यही अनुभव है कि इस देश में मुसलमानों के लिये कोई स्थान नही है तो -- आप अपने लिये कोई सुरक्षित स्थान तलाश करने को स्वतन्त्र है। बताएं कि इस सम्बन्ध में मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं"?

मुसलसानों का प्रतिनिधिमण्डल मोरार जी को गालियां देता बाहर निकल आया। शायद आज मेव लीडर भी इसी प्रकार का ज्ञापन 'गांधी जी" को राजघाट पर देना चाहते हैं।

राष्ट्रीय एकता व संख्यावाद

अल्पसंख्यक बहुसंख्यक वाद के बीज वृक्ष से राष्ट्रीय एकता रूपीफल

प्राप्ति की आशा ऐसा ही है जैसा जलती आग को पैट्रोल से बुझाने का दुष्प्रयास। आज राष्ट्र के अंग अंग से टपक रहे अलगाव वादी कोढ का कारण रूप बीज अतीत की यही दुर्नीति व मानसिकता रही है। अल्प-संख्यक – बहुसंख्यक की विभाजक रेखा मजहब व सम्प्रदाय को मानकर अन्धकार में भटकती दिशा शून्य कांग्रेस सत्ता ने अब नये रोदन स्वर में विधवा विलाप आरम्भ किया है कि "राजनीति को धर्म से अलग किया जाय"। आज जब कर्ण के सत्ता--रथ का पहिया स्वनिर्मित राजनीतिक दल दल में फंस गया है, आँखो के आगे गाण्डीव की प्रत्यंचा सजीव मृत्यु रूप लहराती दीखने लगी है, तब 'धर्म' याद आने लगा है। जब निरीह अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेरकर मारा जा रहा था, जब पाण्डवों को लाखा महल में जलाया व दरबार में द्रोपदी को निर्वस्त्र किया जा रहा था तब किसी को धर्म की याद नहीं आई ? जब "राष्ट्रपिता" ने खलाफत की अस्थिमाला हिन्दुओं के गले में लटकाई, जब मजहब के आधार पर राष्ट्रीय झण्डे में तीन रंग सजाकर राष्ट्रीयता को तीन भागों में बाँट दिया गया, जब पग पग पर मजहब के आधार पर सीटों के बट-वारे किये जाते रहे, जब स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को बापू ने अपना 'भाई' बताया, जब अहिंसा क अवतार गांधी जी व नेहरू जी ने इसी हत्यारे अब्दुल रशीद की फांसी की सजा रुकवाने को दी गई याचिका पर अपने हस्ताक्षर किये थे।

जब युग विभूति वीर सावरकर जसों को लालकिले के तहखानों में धकेला गया। तब किसी को यह नहीं सूझा कि देश को भावी राजनीति को क्या दिशा दी जा रही है ? इसका परिणाम क्या हो सकता है ? जब केवल हिन्दुओं के लिए स्पेशल हिन्दु कोढ बिल बनाया गया, जब काश्मीर में डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी व मुगल सराय में दीनदयाल जी उपाध्याय की निर्मम हत्याएं कराई जा रही थी, जब राष्ट्र हत्यारी मुस्लिम लीग के सांझे में सरकार बनाई जा रही थी, जब मस्जिदों से फतवों की राज-

प्राप्ति की आशा ऐसा ही है जैसा जलती आग को पैट्रोल से बुझाने का दुष्प्रयास। आज राष्ट्र के अंग अंग से टपक रहे अलगाव वादी कोढ का कारण रूप बीज अतीत की यही दुर्नीति व मानसिकता रही है। अल्प-संख्यक्र – बहुसंख्यक की विभाजक रेखा मजहब व सम्प्रदाय को मानकर अन्धकार में भटकती दिशा शून्य कांग्रेस सत्ता ने अब नये रोदन स्वर में विधवा विलाप आरम्भ किया है कि "राजनीति को धर्म से अलग किया जाय"। आज जब कर्ण के सत्ता--रथ का पहिया स्वनिर्मित राजनीतिक दल दल में फंस गया है, आँखो के आगे गाण्डीव की प्रत्यंचा सजीव मृत्यु रूप लहराती दीखने लगी है, तब 'धर्म' याद आने लगा है। जब निरीह अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेरकर मारा जा रहा था, जब पाण्डवों को लाखा महल में जलाया व दरबार में द्रोपदी को निर्वस्त्र किया जा रहा था तब किसी को धर्म की याद नहीं आई? जब "राष्ट्रपिता" ने खलाफत की अस्थिमाला हिन्दुओं के गले में लटकाई, जब मजहब के आधार पर राष्ट्रीय झण्डे में तीन रंग सजाकर राष्ट्रीयता को तीन भागों में बाँट दिया गया, जब पग पग पर मजहब के आधार पर सीटों के बट-वारे किये जाते रहे, जब स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को बापू ने अपना 'भाई' बताया, जब अहिंसा क अवतार गांधी जी व नेहरू जी ने इसी हत्यारे अब्दुल रशीद की फांसी की सजा रुकवाने को दी गई याचिका पर अपने हस्ताक्षर किये थे।

जब युग विभूति वीर सावरकर जसों को लालकिले के तहखानों में धकेला गया। तब किसी को यह नहीं सूझा कि देश को भावी राजनीति को क्या दिशा दी जा रही है? इसका परिणाम क्या हो सकता है? जब केवल हिन्दुओं के लिए स्पेशल हिन्दु कोढ बिल बनाया गया, जब काश्मीर में डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी व मुगल सराय में दीनदयाल जी उपाध्याय की निर्मम हत्याऐं कराई जा रही थी, जब राष्ट्र हत्यारी मुस्लिम लीग के सांझे में सरकार बनाई जा रही थी, जब मस्जिदों से फतवों की राज-

नीति को प्रोत्साहित किया जा रहा था। जब बाईबल के अनुसार शासन चलाने की घोषणाऐं की जा रही थी, जब शाह बानो केस में संविधान को तार-तार किया जा रहा था, जब माननीय बालाजी साहब देव रस, अटल जी, आडवाणी जी व अशोक सिंहल जैसों को तो आये दिन जेलों में धकेला जाता रहा परन्तु अनेक अदालतों से जमानती - गैर जमानती वारण्ट होने पर भी अब्दुल्ला बुखारी की ओर आख खठाकर भी नहीं देखा जा सकता। जब हिन्दुओं को "हम दो हमारे दो" का तोता पाठ पढा पढाकर दूसरी ओर "हम पांच हमारे पच्चीस" के तुमुल घोष को अनसुना किया जाता रहा, जब चालीस साल से निरन्तर करोडों बांग्ला देशी घुसपैठियों से अपना वोट बैंक बढाया व संजोया जाता रहा। आज भी हिन्दुओं के पुष्कर, वैष्णो देवी, गोवर्धन आदि तीर्थों पर यात्रियों से टैक्स वसूला जाता है, जो मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं पर लगाये गये स्पेशल "जजिया" टैक्स की यादें ताजा कराता है। दूसरी और हज के लिए मक्का जाने वाले यात्रियों के बारे में कहा जाता है कि एक ओर का किराया हमारी सरकार स्वयं अदा करती है।

२८-४-९३ के 'जागरण' में विश्लेषण है कि–"१९९३-९४ में हज को जाने वाले २५००० यात्रियों को विदेशी मुद्रा उपलब्ध कराने पर बजट में २१ करोड रुपये का प्रावधान किया गया है। रूसी विमान सेवा "ऐयरोफ्लोट" से १८००० रु. प्रति यात्रि किराया तय करके हजयात्री से केवल ११००० रुपये लिया जाने हैं। यात्रियों पर ३०० रू० प्रति व्यक्ति का हवाई अड्डा टैक्स भी माफ है। इनकी सहायतार्थ ७–१७ लाख की दवाइयां भी भेज दी गयी हैं। तथा पाकिस्तान तीर्थयात्रा पर जाने वाले १५५०० हिन्दु तीर्थ यात्री पूरा व्यय स्वंय सहन करेंगे।" यह है सरकार की धर्म निरपेक्षता, सर्वधर्म स्वभाव का सजीव चित्र। स्मरण रहे हज को जाने वालों में काफी बडी संख्या ऐसी होती है जिनका हज की आड में केवल तस्करी ही धन्धा व पेशा होता है।

जब भारतमां को खुलेआम डायिन कहने वालों का, राष्ट्रध्वज को कपडे की "कतरन" बताने बालों का मंत्री पद पर अभिषेक किया गया, तब धर्म व राजनीति को परिभाषित करने की आवश्यकता कभी महसूस नहीं की गई। केरल के मुस्लिम बहुल "मल्लापुरम" का गठन, शुक्रवार को सरकारी छुट्टी तो विशुद्ध 'धर्म निरपेक्षता' है। और उसी केरल में किसी कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करना घोर 'साम्प्रदायिकता' है। आज जब तुष्टिकरण व "संख्या वादी" राजनीति, पर्सनल लॉ की धर्म-नरपेक्ष व 'सर्व धर्म सम भाव' विधा के झंझा वात ने हिन्दु को झंझोडना आरम्भ कर दिया है, जब अभिशप्त व तिरस्कृत हिन्दु ने करवट बदलनी शुरू की है, जब सत्ता का पाप-घडा फूटने के कगारपर आ पहुंचा है, जब सिंहासन की उल्टी गिनती चालू होतो दिखाई पड़ने लगी है तब धर्म व राजनीति की परिभाषाऐं याद आने लगी हैं।

जब हम राष्ट्र में एक शरीर रूप की कल्पना करते है। तो उसके विभिन्न अंगो में अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक का भेद कैसा ? कभी आंखें या कान, नाक, या जबान को अल्पसंख्यक नही बताते। हाथ या पांव कभी स्वयं को अल्पसंख्यक मानकर उंगलियों को बहुसंख्या की "विशेषता" प्रदान नही करते। स्वयं को कभी विशेषाधिकार नहीं मांगते। किसी भो अंग के क्षतिग्रस्त हो जानें पर दूसरे अंग किसी आदेश की प्रतीक्षा किये बिना सहज भाव व स्वप्रेरणा से तत्काल क्षति ग्रस्त अंग की सहायता करते हैं। फिर राष्ट्ररूपो शरीर में संख्यावाद का कोढ़ क्यों खडा किया गया ? आज कांग्रेस-कल्चर यदि "सहमतों" द्वारा भाई-बहन तथा पति-पत्नी के सम्बन्धों के अन्तर को राम-सीता को भाई बहन प्रचारित कर समाप्त करने को इतना ही आतुर है तो अर्जुन-भक्त जातक बकवासों की बजाय ईश्वरीय महान ग्रन्थ तौरेत को प्रस्तुत क्यों नहीं करते, जहां 'पैगम्बर' अब्राम ने मिस्र में अपनी पत्नी 'सारा' को बहन बताकर रखा

था (तौरेत पैदाइश बाब १२ आयत १०–१८)

आज यदि सरकार विचाराभिव्यक्ति स्वतंत्रता की इतनी पक्षधर है तो 'सैटनिक वर्सेज' पर पाबन्दी क्यों लगाई गई ? जबकि उसे पाबन्दी लगाने से पहले किसी ने पढा तो क्या देखा तक भी नही। क्या इसीलिये ना कि उसका सम्बन्ध एक वर्ग विशेष से है। पुस्तक छपती है अमेरिका व लन्दन में और पाबन्दी लगती है भारत में।

1840–1930 ई० के मध्यकाल खण्ड में हिन्दु समाज को अपमानित करने वाले 'जातक' जैसे चिथडा साहित्य की भारी बाढ आई थी। जब 'रद्दे हिन्दु' (१८४५) 'तौहफतुल हिन्द' (१८५१) 'कथा सिलोई' (१८५४) 'खिलअतलहुनद' (१८६४) 'ऐजाजेमौहम्मदी' (१८६५, 'हृदयतुलअसनाम' (१८६५) 'सौतल्लाह…' (१८६६) 'मसनवी दीन हिन्दु' (१८६६) 'तेगे-फकीर' (१८६३) 'लज्जतुल हिन्द' (१८८०) 'कुफ्र तोड', 'बुतशिकन', 'दाईये इस्लाम', "और सीता का छिनाला" जैसी पुस्तके प्रकाश में आई थी। तब आर्यसमाज के मुन्शी इन्द्र मणिजी, पं० लेखराम, पं० चमूपति जी जैसे उदभट विद्वानों ने इस राष्ट्र घातक बाढ को न केवल रोक ही दिया बल्कि इसे उल्टी दिशा में प्रवाहित भी कर दिया था। शायद 'रंगीला रसूल' पर आकर यह बाढ रुक सकी थी! वैसे 'रद्दे हिन्दु' का १२वां संस्करण तो 1938 में भी 'अलीभाई शरफअली' बम्बई से छपा है!

आज जिस इकबाल को हमने 'राष्ट्र पुरुष' के रूप में स्थापित कर दिया है ये वही इकबाल है जो पाकिस्तान की नींव के पत्थरों में से एक प्रमुख है! जब 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' का उदघोष :–

चीनो अरब हमारा, रोमो खुतन हमारा,
मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहां हमारा।

में बदल गया। जब "खाके वतन का मुझ को हर जर्रा देवता है" के स्वर में मातृभूमि के कण कण को पूज्य बताने वाले इकबाल को देश–भक्ति मजहब का कफन दिखाई देने लगी और गूंज उठी :-

इन ताजा खुदाओं में बड़ा सबसे वतन है,
जो इसका पैरहन है वह मजहब का कफन है।

जब चुनौती भरे स्वर में मजहबी अहंकार गुंजार उठा था :–

ऐ आबे रोद गंगा वे दिन हैं याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा।

जब ३-२-२८ को भारत आये सायमन कमीशन के विरोध में हुये प्रदर्शन पर निर्मम लाठी चार्ज में भारत सपूत लाला लाजपतराय शहीद हो गये तो इस जघन्य काण्ड के विरोध में आयोजित लाहौर की जनसभा में इकबाल ने उक्त काण्ड की निन्दा तक करने से साफ मना कर दिया था। ३० नवम्बर को लाहौर कौंसिल में इस काण्ड की जांच सम्बन्धी प्रस्ताव तक का भी इकबाल ने विरोध किया था। यहां तक कि आप ने 'सायमन' को हार पहना कर उसका सार्वजनिक स्वागत भी किया था।

पाकिस्तान की पत्रिका 'सिन्ध त्रैमासिक' में पाकिस्तान के शिक्षामंत्री सैयद गुलाम मुस्तफा ४-८-८६ में लिखते हैं।

इकबाल मौहब्बत, भलाई व राष्ट्र प्रेम का कवि नही था, वह अहंकार, घृणा, व नसल भेद का कवि था। वह हीरो व लुटेरों का लीडर था। .. बेहूदगी, बाजारू व भौंडेपन का बादशाह बना रहता था, हिन्दोस्तानी रजवाड़े दिल्ली, हैदराबाद, लाहौर, भोपाल, से ही नही लन्दन से भी उस के भिखारीपन व बदचलनी के सबूत मिलते है। उसकी शायरी के कारण ही कायदेआजम का पाकिस्तान टूटा। वह सही अर्थों में फासिस्ट था अपने गुरू नीत्शे की तरह पागल। हम बदमाशों को उन के स्थान से उठाकर उच्चस्तर पर नहीं बैठाना चाहते। जिसने सायमन कमीशन व जनरल डायर की खुशामद में कविताऐं लिखी है। जो वजीफे, भीख व खैरात के लिये निजाम व

भोपाल के दरबारों की परिक्रमा लगाता रहा।

यह है इकबाल की एक झांकी जिसे पाकिस्तान अपनी नींव का पत्थर होने पर भी कूडेदान में फेंक रहा है और हम उसे "राष्ट्र पुरुष" बना रहें है।

इकबाल जिस 'गंगा के किनारे' को 'अपने कारवाँ' के उतरने की अंहकार भरी स्मृति के रूप में पेश करते हैं उसी 'गंगा के दहाने" में मौलाना हाली 'इस्लाम की कब्र' देखकर लिखते हैं :–

वो दीने हजाजी का बेबाक बेडा, निशां जिसका अकसाये आलम में पहुंचा
नजैहूं में उलझा नकुलजम मे झिझका, मुकाबिल हुआ कोई खतरा नजिसका
किये पै सपर जिस ने सातों समन्दर
वो डूबा दहाने में गंगा के आकर

आज "चन्द्रा सोमयज्ञ" व 'सहमत' जसे पाखण्डों की "सफलता" सर्वविदित है। कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता का ढिंढोरा पीट पीटकर एक ओर तो 'धर्म' को राजनीति से हटाने को व्याकुल व विक्षिप्त हुई जा रही है दूसरी और वही कांग्रेस हिन्दुओं का विश्वास छलने को, हिन्दु समाज में अपनी 'धर्मनिष्ठा' व आस्था प्रदर्शित करने को कपट-मुनि का रूप धार कर चन्द्रा स्वामी को मुखौटा बना, 'सोमयज्ञ' का आयोजन करातो है क्या इस प्रश्न का उत्तर मिलेगा? कि चन्द्रा स्वामी का अयोध्या में आयोजित ६ जून ९३ का सोमवज्ञ वस्तुक श्रद्धापूर्वक किया गया धार्मिक अनुष्ठान था, या सत्ता की डूबती नैया बचाने के लिये हिन्दु समाज में फूट डालने का 'कालनेमि चरित्र' और घृणिततम राजनैतिक प्रपंच? इस यज्ञ में लाखों की उपस्थिति तथा निरन्तर ५ दिन चलने की घोषणा की गयी थी। इस पर करोडों की राशि व्यय की गई परन्तु केवल कुछ सौ "तमाशगीर" इकटठे करके दो दिन में ही समाप्त कर दिया गया, यह था 'सोमयज्ञ'?

आधी सदी की कांग्रेस शासन सत्ता का जीवन मूल वही विदेशी शासन नीति सदैव "लडाओ और राज्य करो" रही है । तुष्टीकरण को उदारता, नपुंसकता व स्वार्थपरक 'कुरसी पूजा' को राष्ट्रभक्ति बताकर, गुलाब के बिरवों को काट, नागफनों को सींच सींच कर नव विकास के नाम पर आज देश को रसातल के कगार पर पहुंचा कर अब राष्ट्र को अधर्म, अनाचार, व भ्रष्टाचार से नहीं धर्म से मुक्त करने जा रहें हैं । केवल सत्ता स्थायित्व की दृष्टि से ही भारत में रहने वाले मुसलमानों को 'भारतीय मुसलमान' न बनने देकर आज तक उसे 'भारत का मुसलमान' ही बनाये रखा गया है ।

क्षेत्रीय स्तर पर यही रूप मेवात का रहा है । सामान्य भोले व सीधे मेव समाज में राजनोतिक नेताओं द्वारा मजहब के नाम पर अलगाव वादी व घृणा के प्रचार ने सिवाय उनमें भारतीय प्रतीकों के लिये घृणा उत्पन्न करने के अन्य किसी सच्चे 'इस्लामी जीवन दर्शन', का संचार किया हो दिखाई नही पडता । आज मेव समाज में वही पाश्चात्य फिल्म संस्कृति, टी. वी. रेडियो द्वारा अश्लील संस्कारों व फैशन परस्ती की बाढ लाई जा रही है । फिल्म चरित्र के बारे में डा० इकबाल ने बहुत समय पहले ही इस्लाम के संदर्भ में विवेचना करते हुये लिखा था :-

घही बुत फरोशी, वही बुतगरी है – सिनेमा नहा सनअते आजरी है ।
वो सनअत नहो शेवये काफिरी था – ये सनअत नहीं शेवये साहिरी है ।।

पिछले काफी समय से मेवात में उभरते रहे राजनीतिक नेतृत्व ने कभी समाज के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक पिछडेपन की तरफ ध्यान नही दिया । कौम के गम में 'मगर मच्छी' आँसू बहाने वाले नेताओं ने गरीब जनता को राजनीतिक फुटबाल बनाकर दोनों हाथों से लूटते रहना ही अपना उद्देश्य बनाया हुआ है । गाँव गाँव में नयी नयी पार्टी बाजी खडी करके कहीं गोत–पाल के नाम पर तो कहीं किसी और बात पर

सीधे सादे लोगों को आपस में लडवाना, झूंठे मुकद्‌मों में फंसवाना, दोनों पक्षों को पुलिस द्वारा लुटवाना व लूटना, **फिर स्वयं** ही **'अमन के देवता'** बनकर उनके फैसले कराकर दौनों पक्षों **को अपने** वोट पिंजरे में समेटना ही इनकी सच्ची 'कौमी खिदमत' रही है। यह आकलन हमारा ही नहीं मेवात के निष्पक्ष प्रखर मेव बुद्धिजीवियों का भी यही निष्कर्ष रहा है, जिसकी चर्चा हम पिछले पृष्टों में कर चुके हैं। यह है "भारतीय" तथा 'भारत के' दर्पणों में मेवात के अतीत व वर्तमान का चित्र जो राजनीति के बाजीगरों ने बना छोडा है।

आज कौतूहल रूप हनुमान की पूंछ को आग लगाने वाले शायद इस के दुष्परिणामों को नहीं सोच रहे, जो सिवाय लंका दहन के और नही हो सकते। जब धृतराष्ट्र के वाह्य नेत्रों के साथ अन्तर्चक्षु भी बन्द हो जाते हैं, जब भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य भी भरी सभा में किये जा रहे द्रोपदी क चीरहरण तथा दु:शासन के दैत्य-हास को अनदेखा कर देते हैं, जब पीडित पाण्डवों को लाखा महल में जलाने के कुचक्र चलाये जाते हैं, जब कृष्ण जैसों का उपहास उडाया जाता है, अपमान किया जाता है। तो कुरुक्षेत्र की भूमि पर पान्चजन्य के उद्‌घोष व गाण्डीव की टंकार में से ही इसके प्रतिकार का उद्‌भव होता है।

महाकवि दिनकर के शब्दों में :—

तप्त होता क्षुद्र अन्तर्व्योम पहले व्यक्ति का,
और फिर उठता धधक समुदाय का आकाश भी।
क्षोभ से, दाहक घृणा से, गरल ईर्ष्या द्वेष से,
भट्टियाँ इस भांति जब तैयार होती हैं तभी
युद्ध का ज्वालामुखी है फूटता। (कुरुक्षेत्र)

आज

मानवता की चिता-भस्म ले स्वर्णिम साज सजाये जाते,
जीवन-मूल्यों की समाधिपर जय क बाद्य बजाये जाते।

काट काट बिरवे गुलाब के आज नागफन सींचा जाता,
डाल डाल पर बिठा उल्लुओं को माली मन में हर्षाता।

निर्वाचन वैतरणी तरने नैतिकता की नाव डुबा कर,
चला जा रहा माँझी हंसता बैठा कागज की नवका पर।

आज पुजारी दीपक से मां का मन्दिर ही फूंक रहा है।
हूक भर रही कोकिल को ये कहता है पिक कूक रहा है।

जय जय कार बुला बापू की बापू क भक्तों की टोली,
बापू के निष्ठा-मूल्यों की जला रही जनपथ पर होली।

राजनीति की रजत–तुला पर नैतिकता नोलाम हो रही,
आज सत्य 'निष्ठा' हर्षद, बोफोर्स बनी सुखधाम हो रही।

'आर्य' अपने रुधिर–नीर से जो माता के चरण धो गये,
वे सत्ता की चका चौंध में स्मृति – पटल से लुप्त हो गये।

"दीवान चन्द आर्य"

क्या यह सत्य नहीं ?

कि :- 1857 का प्रथम स्वतंत्रता युद्ध, भारत में हिन्दु साम्राज्य स्थापित करने के लिये नहीं अपितु बहादुरशाह जफर की स्वयं पापों के बोझ से डूबती मुगलसत्ता को बचाने लिये लडा गया था। विगत आठ सौ वर्षों तक मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दुओं पर ढाये गये वर्बर रोमान्चकारी अत्याचारों को अनदेखा करके "हिन्दू" ने काश्मीर से कन्या कुमारी और अटक से कटक तक मरणासन्न मुगलसत्ता की रक्षार्थ अपना रक्त पानी की तरह बहाया था। जबकि :-

इस संघर्ष की पीठ में छुरा घोंपने वाला कोई अन्य नहीं स्वयं सम्राट का निकट सम्बन्धी समधी मिर्जा इलाही बख्श ही था। जिसने छः लाख रुपये के बदले बहादुर शाह जफर को धोखे से सपरिबार हुमायूं के मकबरे पर ले जाकर कर्नल हडसन के हवाले कर दिया था। परन्तु :-

हिन्दू की इस उदारता, नैतिक सहिष्णुता, सदभाव, धर्म निरपेक्षता का बदला बहादुरशाह के सहधर्मी समाज ने एक सदी से पहले पहले ही भारत माता के टुकडे टुकडे करके चुकाया है।

फिर भी ! हिन्दु सहिष्णुता ने फिर 1857 के कटु अनुभव को अनदेखा कर मजहब के नाम पर देश बाँटने वाले वर्ग को पुनः 'भाई' मानकर सत्ता में भागीदारी प्रदान कर दी। मगर आज कट्टरवादी नेतृत्व भारत के सामान्य मुसलमानों को पुनः निरन्तर वही अलगाववादी दिशा प्रदान कर रहा है जो 1857 से 1947 तक बराबर की जाती रही और जिस का स्वाभाविक परिणाम 1947 का ऐतिहासिक महा विस्फोट हुआ।

तुष्टिकरण की "गांधी नीति" के परिणामों के
प्रति चिन्तित हृदय की अन्तर्पीडा

The Indians must be perpared to look forward for the day when the very name India will have disappeared and the Millat being established all over the continent will have acquired the name of "Dinia"

("India Devided" by Dr Rajendra Parshad)

अर्थात : भारतवासियों को उस आने वाले दिन के लिए तैयार हो जाना चाहिए जबकि हिन्दोस्तान का नाम ही मिटा दिया जायेगा। और इस सारे भूमि खण्ड पर मिल्लत स्थापित होकर इस देश का नाम दीनिया (दीनस्तान) बन जाएगा।

1940 की राजनीतिक रण नीतियों पर डा० राजेन्द्र प्रसाद जी की तत्कालीन प्रतिक्रिया

फिर करो घोषणा निर्भय हो, इस में है अत्याचार कहां ?
जिस को भारत से प्यार नहीं, उसका कैसा अधिकार यहां ?
मां के आंचल का दूध पिया, बेटा बनकर रहना होगा,
भारत के हर बाशिन्दे को 'वन्देमातरम' कहना होगा।

(आचार्य रामनाथ जी 'सुमन')

-: मुद्रक :-

दिग्विजय प्रिंटिंग प्रेस

पंजाबी कालौनी, पुन्हाना (गुडगावां)